इसरो isro

अक्ष

वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

अंक सं. 10, अप्रैल - सितंबर, 2021

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादकीय

संरक्षक

डॉ. डी साम दयाल देव
निदेशक, आईआईएसयू

मुख्य संपादक

राजीव सिन्हा

संपादक मंडल

संजयकुमार सिंह
प्रियदर्शन
उल्लास जोस
आर महेश्वरी अम्मा

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

वी के सी (आईआईएसयू/सीएमएसई)
वट्टियूरकाव,
तिरुवनंतपुरम - 695 013
दूरभाष - 0471 2569129

मित्रों दीपावली व ईद-ई-मिलाद पर्व की शुभकामनाओं के साथ एक बार फिर रंग-बिरंगे साहित्य विधाओं का समावेश कर हमारी घरेलू पत्रिका अक्ष का एक नया बृहद अंक आप सबको पेश करते हुए मुझे अति हर्षोल्लास हो रहा है। जैसा कि मैंने आपको गत अंक में विदित कराया था कि हमारी पत्रिका अक्ष को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में प्रथम स्थान मिला है। मुझे आप सब के साथ यह साझा करते अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि गत 14 सितंबर, 2021 को हमारे आदरणीय निदेशक डॉ डी साम दयाल देव ने भारत सरकार के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के हाथों से विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह में यह पुरस्कार ग्रहण कर हमारे एकक की प्रतिष्ठा में चार-चाँद लगा दिए हैं।

मित्रों, इस नए अंक में भी आप सभी के लिए कुछ-न-कुछ पठन सामग्री का समावेश किया गया है। जहाँ एक ओर गंभीर समस्या से ग्रस्त पड़ोसी देश अफगानिस्तान में हुए सत्ता परिवर्तन और उसका भारत पर प्रभाव पर चर्चा की गई है वही कोविड-19 महामारी से प्रवासी श्रमिकों के पलायन से उत्पन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है। चंद्रमा के प्रति अनंत जिज्ञासाओं का और भारत में कोविड टीकाकरण जैसे विषयों पर भी ध्यान दिया गया है। बेटियों के रूप और इलाहाबाद (प्रयागराज) के मतवाले को काव्य में ढाल कर पेश किया गया है। तकनीकी लेखन में आदित्य एल-1 अभियान तथा नई धातु के प्रयोग पर चर्चा हुई है व अन्य स्वाद और प्यार पर आधारित कहानी समाविष्ट कर इस अंक को मनोरंजक बनाने का प्रयास किया गया है।

आशा है हमारा प्रयास आपको पसंद आएगा और आपके बहुमूल्य सुझाव हमें हमेशा की तरह दिन-प्रति-दिन नया करने का प्रोत्साहन देंगे। आपका सहयोग और हमारे लेखकों की भागीदारिता हमें और उत्कृष्ट सृजन करने की प्रेरणा देंगे।

धन्यवाद।

राजीव सिन्हा

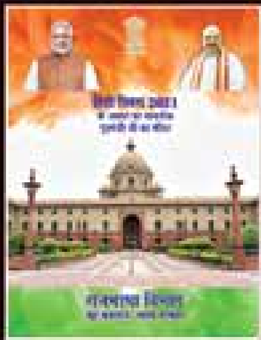

पन्ने पलटने पर...

08 मानव जिज्ञासा का स्रोत चंद्रमा
12 टोकियो-2020 ओलिंपिक्स में भारत का शानदार प्रदर्शन
14 वो भी तो एक बेटी ही होती है
15 इलाहाबादी मतवाला
16 योग दर्शन
18 अफगान समस्या और भारत की चुनौतियाँ
23 आदित्य-एल 1 अभियान में प्रयुक्त जड़त्वीय निर्देश एवं त्वरणमापी पैकेज (आईआरएपी-300) गुणता आश्वासन एवं परीक्षण और मूल्यांकन
26 भारत में कोविड टीकाकरण- लक्ष्य और चुनौतियाँ
28 'प्यार एक सार्वभौमिक भाषा'
29 टिप्पणियाँ
30 अंतरिक्ष शब्दावली
31 प्रशासनिक शब्दावली
32 ग्रीक व लैटिन पदबन्ध
33 राजभाषा प्रश्नोत्तरी
34 मेरी प्रिय पुत्री
36 कोविड-19 और प्रवासी श्रमिकों का पलायन
39 भारत की आज़ादी का 75वाँ पर्व, अमृत महोत्सव
40 आपके जीवन में सफलता का मापदंड क्या है?
42 कान दीजिए
43 स्वतंत्रता दिवस समारोह-2021
44 एलपीएससी से नई सामग्री की प्राप्ति
46 चुटकुले
47 स्वाद
48 नए सह निदेशक का कार्यभार ग्रहण
48 सह निदेशक की सेवानिवृत्ति
49 राजभाषा नीति की मुख्य बातें
50 क्या आप जानते हैं?
52 वी के सी की हिंदी गतिविधियाँ
56 उपलब्धियाँ
58 पाठकों की ओर से

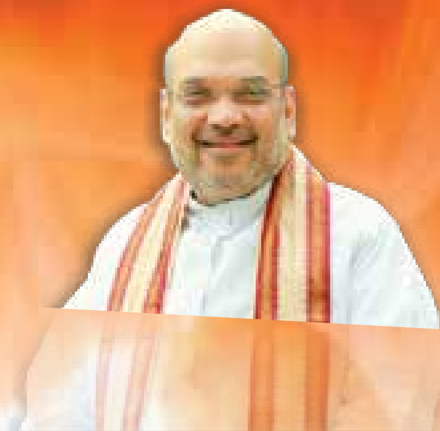

हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

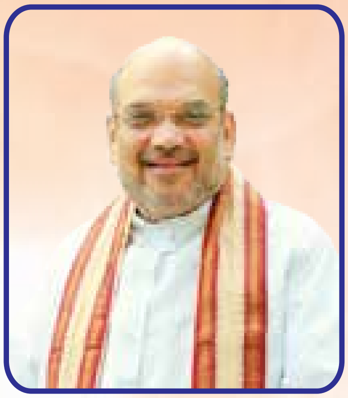

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मानव जिज्ञासा का स्त्रोत चंद्रमा

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

1. प्रस्तावना

चंद्रमा पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है जो लगभग 3,85,000 कि.मी. की दूरी पर पृथ्वी की परिक्रमा करता रहता है और रात्रि आकाश में सबसे चमकता हुआ आकाशीय पिंड दीख पड़ता है। मानव जीवन के प्रादुर्भाव काल से ही चंद्रमा हमारी ज़िंदगी का अभिन्न हिस्सा रहा है। यूँ तो सभी खगोलीय पिंडों के प्रति हमारी जिज्ञासा रही है, परन्तु, पृथ्वी के सबसे नज़दीक होने के कारण चंद्रमा के प्रति हमारी जिज्ञासा, हमारा लगाव तथा आकर्षण कुछ विशिष्ट ही रहा है। इसी कारण से चाँद हमारे कवियों-लेखकों की कल्पनाओं में, प्रेमी-प्रेमिकाओं के किस्सों में, दादी-नानी की कहानियों में एवं बच्चों की लोरियों में विशिष्ट स्थान रखता है। चाँद को सौंदर्य के प्रतिमान के रूप में भी देखा जाता रहा है जो कि वस्तुत: सूर्य की किरणों के चाँद की सतह से होते परावर्तन के कारण इसकी चमक के कारण ही है। साथ-ही-साथ चाँद के घटते-बढ़ते आकार ने मानव के कौतूहल को और अधिक बढ़ा दिया है।

अगर आपने गौर किया होगा तो यह स्पष्ट है कि चाँद का एक ही पहलू हमें हमेशा दिखाई देता रहता है। इसका कारण है कि चाँद को अपने अक्ष पर एक चक्कर घूर्णन करने में तथा पृथ्वी की परिक्रमा करने में भी समान रूप से लगभग 27.3 दिन का समय लगता है। चाँद की इन गतियों का उपयोग ज्योतिषी, गणितज्ञ एवं वैज्ञानिक अपनी खगोलीय गणनाओं में तथा विभिन्न प्रकार के पंचांगों को तैयार करने में करते हैं। पृथ्वी एवं चंद्रमा के मध्य जो गुरुत्वाकर्षण बल लगता है, वह वैज्ञानिकों के अनुसार, पृथ्वी के घूर्णन अक्ष के स्थायित्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। साथ-ही-साथ, इसी बल के कारण बहुत हद तक पृथ्वी पर जलवायु पर नियंत्रण भी रहता है।

2. चाँद के शुरुआती अन्वेषण

खगोल विज्ञान की शुरुआत के साथ ही चंद्रमा की गति को समझने की कोशिशें होने लगीं। चौथी तथा पाँचवीं शताब्दियों में चंद्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण को समझने के लिए सिद्धांत प्रतिपादित किए गए। सातवीं-आठवीं शताब्दी तक यह समझा जाने लगा कि चाँद गोलाकार है और चंद्रमा की रोशनी सिर्फ सूर्य की किरणों के परावर्तन के कारण ही है। इसमें भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया था। सेल्यूकस, पोलेमी एवं आर्कमिडीज़ जैसे वैज्ञानिकों ने चाँद की पृथ्वी से दूरी एवं चाँद की गति की गणना की। गैलीलियो द्वारा स्वयं विकसित किए गए दूरबीन से किए गए अध्ययन से पता चला कि

चंद्रमा की सतह सपाट न होकर उबड़-खाबड़ है तथा इस पर बड़े पर्वत तथा बड़ी खाइयाँ भी हैं। इससे चाँद के प्रति जिज्ञासा को और बल मिला। इसके बाद बैटिस्टा, रिकिओली एवं ग्रिमाली जैसे वैज्ञानिकों ने इन खाइयों एवं गड्ढों की गहराई मापने में सफलता प्राप्त की। 1837 तक लगभग 1000 चंद्र पर्वतों की ऊँचाई मापी जा चुकी थी। गेलीलियो ने पहले सिद्धांत दिया था कि चंद्रमा के गड्ढे ज्वालामुखीय गतिविधियों के कारण बने हैं। परन्तु, रिचर्ड प्रॉक्टर ने 1870 में यह बताया कि ये गड्ढे चट्टानी पिंडों के चंद्रमा की सतह पर टकराने से बने हैं। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में गिलबर्ट जैसे वैज्ञानिकों के शोध ने इस तथ्य की पुष्टि भी कर दी। 1950 तक आते-आते चंद्रमा के सतह का पूरा मापन भी किया जाने लगा एवं यह स्वयं अपने-आप में एक संपूर्ण विज्ञान की तरह विकसित हो गया।

3. चंद्रमा के अन्वेषण के लिए अभियान

पृथ्वी के अलावा चाँद ही एक ऐसा खगोलीय पिंड है जहाँ मानव ने अपने कदम रखे हैं। 1959 में, सोवियत संघ का 'लूना' अंतरिक्षयान चंद्रमा की सतह पर पहुँचनेवाला पहला मानवरहित अंतरिक्षयान बन गया। अमेरिकी अपोलो अभियान अभी तक मानव को चंद्रमा पर पहुँचाने वाला एकमात्र श्रृंखलाबद्ध अभियान है। 1966 में 'लूना 9' ने पहली बार चंद्रमा की सतह पर नियोजित तरीके से मृदु अवतरण करने का इतिहास रचा और 'लूना 10' चंद्रमा की कक्षा में पहुँचने वाला पहला मानवरहित यान बना। तत्पश्चात् 1968 में, अपोलो 8 ने पहली बार मानव को चंद्र-कक्षा तक पहुँचाया।

गौरतलब है कि सोवियत संघ एवं अमेरिका के बीच खगोलीय अभियानों की होड़ में शुरुआती एक दशक तक सोवियत संघ ही आगे रहा। अमेरिका ने भी सर्वेयर, जेमिनी, नामक अभियान श्रृंखलाएँ आयोजित कीं पर विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने में सोवियत संघ हमेशा आगे निकल गया।

4. मानव का चंद्र पर अवतरण

अपोलो-11 ने सोवियत वर्चस्व के सिलसिले को तोड़ा और यह पहला अंतरिक्ष अभियान बना जिसने मानव को चंद्रमा की सतह पर पहुँचाया। अमेरिकी नील आर्मस्ट्रांग एवं एड्विन एल्ड्रिन ने 20 जुलाई, 1969 को 20.18 विश्व मानक समय (UTC) पर चंद्रमा पर पहुँचने में सफलता प्राप्त की। छः घंटे बाद अर्थात् 21 जुलाई को 02.56 यू.टी.सी पर आर्मस्ट्रांग चंद्रमा की सतह को स्पर्श करनेवाले पहले मानव बने। थोड़ी देर बाद एल्ड्रिन भी चंद्र-सतह स्पर्श कर पाए। उन्होंने लगभग ढाई घंटे तक वहाँ समय बिताया और चंद्रमा की सतह से पदार्थों के नमूने एकत्रित किए। अभियान के तीसरे सदस्य माइकल कोलिन्स चंद्रमा की कक्षा में अकेले अंतरिक्षयान को चलाते रहे। एक दिन बाद तीनों एक साथ मिले और 24 जुलाई को वापस धरती पर लौट आए।

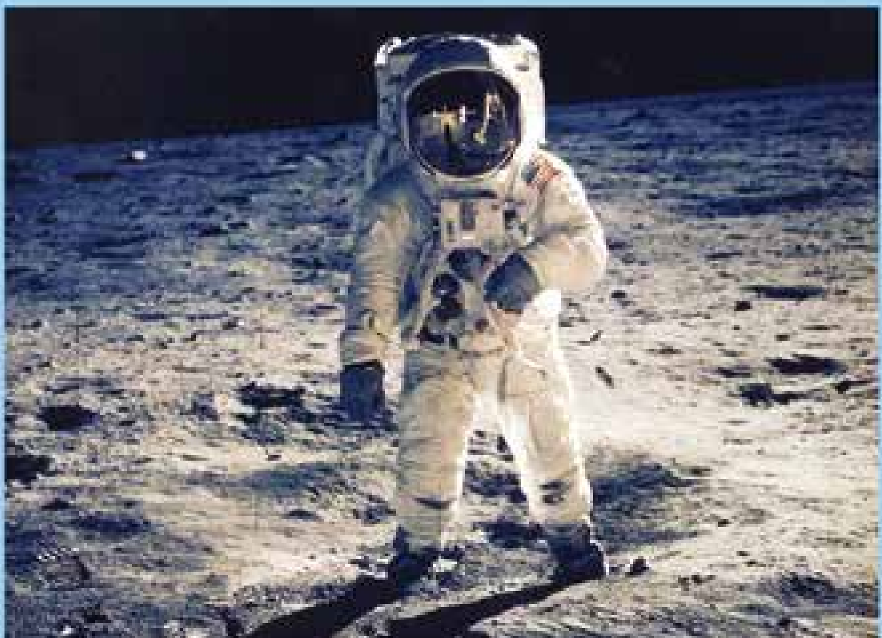

संपूर्ण विश्व में लोगों ने टेलिविज़न पर आर्मस्ट्रांग के चंद्र-अवतरण को जीवंत देखा। लाखों लोगों ने इसे रेडियो पर जीवंत सुना। इस एकमात्र घटना, जिसे आर्मस्ट्रांग ने "मनुष्य के लिए एक छोटा कदम, मानवता के लिए लंबी छलांग" करार दिया था, ने दुनिया भर में अंतरिक्ष अन्वेषण के अभियानों के प्रति जर्बदस्त जागरूकता जगा दी।

अपोलो 11 से अपोलो 17 तक के अभियानों ने, जिसमें अपोलो 13 अभियान को बीच में ही छोड़ना पड़ा था, लगभग 382 किलोग्राम पदार्थ के नमूने एकत्रित किए। इन अभियानों ने तकनीक के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति को दर्शाया तथा आगे भी इस प्रगति को उत्तरोत्तर विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

सोवियत संघ ने लुनोखोड 1 (1970) एवं लुनोखोड 2 (1973) अभियानों से चंद्रमा पर रोबोटीय रोवर भेजने में सफलता प्राप्त की। 1977 में 'पाथफाइंडर' के मंगल ग्रह पर पहुँचने के पहले लुनखोड किसी बाह्य खगोलीय पिंड पर प्रेषित एकमात्र दूर-संचालित यान थे।

5. चंद्र अभियानों की पुनर्वापसी

कुछ वर्षों के शून्यकाल के बाद 1990 के दशक में चंद्रमा पर भेजे जाने वाले अभियानों की पुनर्वापसी हुई। 1990 में, जापान ने 'हितने' यान के माध्यम से चंद्रमा की कक्षा में पहुँचने वाला तीसरा देश बनने में सफलता प्राप्त की। अमेरिकी अभियानों में 'क्लेमेंटीन' (1954) एवं 'लूनर प्रॉस्पेक्टर' (1998) प्रमुख हैं। यूरोपीय अंतरिक्षयान स्मार्ट-1 भी 1994 से 1996 के दरम्यान चंद्रमा की कक्षा में चक्कर लगाता रहा। चीन ने भी 'चेंज' श्रृंखला के तहत कई अभियान छोड़े। 2007 में, 'चेंज-1' ने चंद्रमा का चक्कर लगाना प्रारंभ किया और 2009 में सुनियोजित तरीके से चंद्रमा की सतह पर पहुँच गया। चेंज-2 ने 2010 में तथा चेंज-3 ने 2013 में चंद्र कक्षा में पहुँचने में सफलता प्राप्त की। चेंज-3 ने एक लैंडर को चंद्रमा की सतह पर अवतरित कराया जिससे बाद में एक रोवर चंद्रमा पर निकलने तथा चलने में सफल हुआ। 2018 में चेंज-4 चंद्रमा की सुदूर सतह पर अवतरित होनेवाला पहला यान बना। नवंबर-दिसंबर, 2020 में चेंज-5 भी चंद्रमा की कक्षा में पहुँचा तथा वहाँ से नमूने एकत्रित कर वापस धरती पर लाने में सफल हुआ। 1976 में सोवियत संघ के लूना-24 के बाद चेंज-5 पहला अभियान बना जिसमें चंद्रमा से नमूने वापस धरती पर लाए गए।

6. भारतीय चंद्र अभियान

22 अक्तूबर, 2008 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो ने चंद्रयान-1 को प्रक्षेपित किया और चंद्रमा की 200 कि.मी. की कक्षा में पहुँचने में सफल हुआ। इस अभियान में विभिन्न देशों के तथा भारतीय कुल मिलाकर 11 यंत्र थे। इसमें से एक मून इंपैक्ट प्रोब (एम आई पी), जो कि 34 कि.ग्रा. वजन

का था, ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट 14 नवंबर, 2008 को सफलतापूर्वक छलांग लगाई। अगस्त, 2009 तक चंद्रमा की कक्षा में सफलतापूर्वक काम करते हुए चंद्रयान-1 ने महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधानों को अंजाम दिया। इनमें सबसे प्रमुख है कि उसने चंद्रमा पर जल की मौजूदगी के प्रमाण ढूँढने में सफलता प्राप्त की। इसके अलवा, चंद्रयान-1 ने भारतीय जनमानस में अंतरिक्ष के प्रति एवं विशेषकर चंद्रमा के प्रति, जागरूकता लाने में महती योगदान किया।

22 जुलाई, 2019 को भारत ने चंद्रयान-2 को प्रक्षेपित किया। इसमें 'विक्रम' लैंडर तथा 'प्रज्ञान' रोवर अभियान भी शामिल थे। इस अभियान में उन्नत एवं अत्याधुनिक वैज्ञानिक यंत्र लगे हुए हैं। 7 सितंबर, 2019 को चंद्रयान-2 अभियान के घोषित उद्देश्यों के तहत विक्रम को चंद्र-सतह पर मृदुरूप से अवतरित करने का प्रयास किया गया, परन्तु हमें सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। बहरहाल, ऑर्बिटर जिसमें आठ यंत्र लगे हुए हैं, दो साल से अधिक समय से लगातार चंद्रमा की कक्षा में परिक्रमा कर रहा है और अपना काम बड़ी मुस्तैदी से कर रहा है।

अति संवेदनशील विम्ब अवरक्त स्पेक्ट्रोमीटर (IIRS) के कारण हमें जल की उपस्थिति एवं हाइड्रॉक्सिल एवं जल के अणुओं में विभेदन करने में सहायता मिली है। इसी प्रकार, द्वि-आवृत्ति संश्लेषी द्वारक रडार (DFSAR) ने चंद्र ध्रुवों पर जमी बर्फ की उपस्थिति की सटीक जानकारी दी है। वृहत् क्षेत्र मृदु एक्स किरण स्पेक्ट्रोमीटर (CLASS) के माध्यम से क्रोमियम एवं मैंगनीज का पता चला है, जो कि सुदूर संवेदन से उत्पन्न सबसे सटीक विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त हुआ है। सौर एक्स-किरण मॉनिटर (XSM) ने न सिर्फ चंद्रमा पर पड़ती सौर किरणों के विकिरण का अध्ययन किया है, बल्कि सौर-प्रदीप्त (Solar Flare) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ संकलित की हैं।

इस प्रकार, दो वर्षों में ही चंद्रयान-2 ने अप्रतिम रूप से एक-से-एक नई जानकारियाँ एकत्रित की हैं। आनेवाले समय में इनके और विश्लेषण अवश्य ही किए जाएँगे और आशा है कि चंद्रमा के बारे में हमें कई नवीन जानकारियाँ मिल पाएँगी।

7. भावी अभियान

आनेवाले वर्षों में कई देश चंद्रमा पर अपने नए अभियान भेजनेवाले हैं। 'स्लिम' के माध्यम से जापान अत्याधुनिक अवतरण तकनीक को प्रदर्शित करनेवाला है। रूस भी 'लूना' अभियान को पुनर्जीवित कर अगले चार-पाँच वर्षों में चार अभियान भेजनेवाला है। अमेरिकी एजेंसी नासा भी 'आर्टेमिस-1' के ज़रिए पुन: चंद्र अभियानों को पुनर्जीवित करने वाला है तथा वह सुदूर अंतर्ग्रहीय अभियानों के लिए चंद्रमा को आधार कैंप बनाने की संभावनाएँ तलाश करने वाला है। चीन भी चेंज-5 की सफलता के बाद कुछ नई तकनीकों के प्रदर्शन के लिए अगले अभियान की तैयारी में जुट गया है। भारत भी चंद्रयान-3 के माध्यम से एक बार पुन: मृदु चंद्र-अवतरण को प्रदर्शित करने का प्रयास करनेवाला है।

इन मानव रहित अभियानों के अलावा, अमेरिका 'आर्टेमिस-2' को भी भेजने की योजना बना रहा है। इस अभियान के तहत मानव युक्त 'ओरियन' यान चंद्रमा के बगल से उड़ते हुए वापस पृथ्वी पर आएगा।

8. उपसंहार

मानव का अन्वेषी मन निरंतर अंतरिक्ष पिंडों की खोज में लगा हुआ है। विशेषकर, चंद्रमा के प्रति उसके लगाव के कारण अनेक अभियान आएँगे जो चंद्रमा के बारे में अनेक जानकारियाँ उपलब्ध करा सकेंगे। तब तक बच्चे अनवरत 'चंदा मामा दूर के ......' गाते ही रहेंगे, प्रेमी 'महताब तेरा चेहरा ....' गाते हुए 'चाँद सी महबूबा हो ....' के ख्यालों में मस्त रहेंगे। इस एक चाँद ने हममें कितनी जिज्ञासा दी है तथा कितनी खुशियाँ बाँटी है, इसका हिसाब लगाना मुश्किल है।

* * * * * *

टोकियो-2020 ओलिंपिक्स में भारत का शानदार प्रदर्शन

स्मिता नायर एस वी
वैयक्तिक सचिव, एमईएफए

टोकियो-2020 ओलिंपिक की शुरुआत जापान के टोकियो में 23 जुलाई, 2021 को उद्घाटन समारोह के साथ हुई और इसका समापन 8 अगस्त, 2021 को हुआ। ये 32 वाँ ओलिंपिक था। भारत के अलावा टोक्यो ओलिंपिक खेलों में कुल 205 देशों ने हिस्सा लिया और 11326 खिलाड़ी प्रतिभागी रहे। इस ओलिंपिक में संयुक्त राज्य अमेरिका ने 39 स्वर्ण, 41 रजत और 33 कांस्य समेत 113 पदक अपने नाम किए, जबकि चीन ने 28 स्वर्ण, 32 रजत और 18 कांस्य सहित कुल 88 पदक हासिल किए। भारत 7 पदकों के साथ 48 वें स्थान पर रहा। टोकियो में कुल 63 देशों ने गोल्ड मेडल पर कब्ज़ा जमाया, जिसमें एक नाम भारत का भी है।

टोकियो-2020 ओलिंपिक्स में भारतीय खिलाड़ियों ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए सात पदक अपने नाम किए। भारत ने 1 स्वर्ण, 2 रजत और 4 कांस्य पदकों के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और देश का नाम रोशन किया। टोकियो ओलिंपिक 2020 भारत के लिए ऐतिहासिक रहा। इस ओलिंपिक में जहाँ भारत ने सबसे ज़्यादा पदक जीतने का रिकॉर्ड बनाया, वहीं नीरज चोपड़ा ने जेवलिन थ्रो में गोल्ड मेडल जीतकर एथलेटिक्स में पदकों का खाता खोला। इससे पहले देश ने 2012 लंदन ओलिंपिक में 6 पदक जीते थे, जिसमें 2 रजत और 4 कांस्य पदक थे।

भारत ने टोकियो ओलिंपिक्स में भारोत्तोलक मीराबाई चानू के रजत पदक के साथ शानदार शुरुआत की थी। महिलाओं के 49 किग्रा वर्ग प्रतियोगिता में

उन्होंने कुल 202 किग्रा भार उठाया। यह उनका पहला ओलिंपिक पदक है। उन्होंने रियो 2016 के निराशाजनक प्रदर्शन को पीछे छोड़ते हुए यह कामयाबी हासिल की। वे कर्णम मल्लेश्वरी के बाद ओलिंपिक पदक जीतने वाली दूसरी भारतीय भारोत्तोलक भी बन गई हैं। मुक्केबाजी में लवलीना बोरगोहेन का पहला ओलिंपिक था 2020 में। उन्होंने शुरुआत में शानदार प्रदर्शन किया, लेकिन सेमीफाइनल में उन्हें तुर्की के बुसेनाज़ से हार का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने देश के खाते में एक कांस्य पदक जोड़कर देश को गौरवान्वित कर दिया।

इस ओलिंपिक में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने इतिहास रचा है। टीम ने इस ओलिंपिक में अद्भुत प्रदर्शन किया। देशवासियों के 41 साल के इंतज़ार के बाद, भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने आखिरकार एक और ओलिंपिक पदक हासिल कर लिया और शानदार प्रदर्शन करते हुए जर्मनी को हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया। टीम को आखिरी पदक स्वर्ण पदक के रूप में 1980 मॉस्को ओलिंपिक में वासुदेवन भास्करन की कप्तानी में मिला था।

भारत में बैडमिंटन क्वीन के नाम से मशहूर पी वी सिंधु दो व्यक्तिगत ओलिंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला और दूसरी भारतीय खिलाड़ी बन गई हैं। पी वी सिंधु ने महिला एकल मुकाबले में चीन की ही बिंगजोयाओ को हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया। पहलवान रवि कुमार दहिया ने टोकियो ओलिंपिक्स में 57 किग्रा भार वर्ग कुश्ती में रजत पदक जीता। उन्होंने अपनी कामयाबी से भारत के लिए खाते में दूसरा रजत पदक जोड़ दिया।

टोकियो ओलिंपिक नीरज चोपड़ा के लिए याद किया जाएगा। नीरज इस ओलिंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय एथलीट बने और अभिनव बिंद्रा के बाद ऐसे दूसरे व्यक्तिगत खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने पुरुषों की भाला फेंक स्पर्द्धा में दूसरे प्रयास में 87.58 मीटर तक भाला फेंक कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। ट्रैक एंड फील्ड इतिहास में भारत ने पहली बार ओलिंपिक में कोई पदक जीता है। पहलवान बजरंग पुनिया टोकियो 2020 में शानदार प्रदर्शन करते हुए पुरुषों के 65 किग्रा फ्रीस्टाइल कुश्ती में कज़ाकिस्तान के दौलत नियाबेकोव को हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया।

टोकियो ओलिंपिक में भारतीय महिला हॉकी टीम भले ही मेडल से चूक गई, लेकिन भारतीय महिला हॉकी ने उससे पहले इतिहास रच दिया है। दरअसल यह पहला मौका था जब भारतीय महिला टीम सेमीफाइनल में पहुँची थी। टीम के प्रदर्शन ने सभी भारतीयों का दिल जीत लिया और भारत में हॉकी के विकास के लिए नए दरवाज़े खोल दिए हैं। उनके इस प्रयास की देश भर में तारीफ हो रही है। राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमंत्री और खेल जगत के तमाम दिग्गज़ों ने भी इस टीम का हौसला बढ़ाया है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने टोकियो ओलिंपिक में भारतीय महिला हॉकी टीम को दिल जीतने वाला बताते हुए कहा कि हमें आप पर गर्व है।

* * * * * *

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।

– महात्मा गाँधी

वो भी तो एक बेटी ही होती है

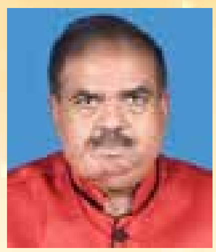

राजीव सिन्हा
ग्रुप निदेशक एम डी पी जी

जब जन्म लेकर आती है इस धरा पर वो
घर में मिले जुले भावों की क्यारी बोती है ।
बन कर अपने पिता के टुकड़ा हृदय का वो
हर गुण में वो अपनी माँ का प्रतिरूप होती है ।
वो भी तो एक बेटी ही होती है ।

उंगली पकड़ कर चलना बोलना सिखाया जिसे
जो हर एक माता पिता के सिर का मान होती है |
सजाती है ढेरों सपने ऊँचे आकाश में उडने के
पंख टूट जाने पर पिता के गले लगकर रोती है |
वो भी तो एक बेटी ही होती है ।

जिससे साझा कर सकते हैं बेहिचक सब कुछ हम
जो हर बात को मन में छुपा कर रखती है ।
वो बहन जो अपने भाई के लिए बनकर माँ
बचपन से ही जिम्मेदारियों का बोझ ढोती है।
वो भी तो एक बेटी ही होती है ।

पत्नी बन मकान को घर में परिवर्तित कर दे
पुरुष के नीरस जीवन को खुशियों से संजोती है ।
हर सदस्य, हर रिश्ते का रख कर मन से मान
जो घर के हर मोती को एक सूत्र में पिरोती है |
वो भी तो एक बेटी ही होती है |

एक परिपक्व गृहणी बन जाती हैं नये घर
जो सबको खिलाकर खुद कभी भूखी सोती है।
माँ बनकर नया जीवन सृजन करने वाली वो
वो अपनी संतान के लिए ईश्वर तुल्य होती है ।
वो भी तो एक बेटी ही होती है ।

फिर घर का बुजुर्ग बनकर लेती हैं एक नया रूप
आने वाली पीढी को जीवन का ज्ञान देती है |
नानी दादी बन नाती पोतों को प्यार दुलार दे
जो एक नये परिवार बनने का आधार होती है |
वो भी तो एक बेटी ही होती है ।

जीवन पर्यंत जो बनी रहती हैं अपने पापा की परी
एक नयी पहचान पाने के लिए पुरानी को खोतीं है।
पिता के पत्थर जैसे सख्त हृदय को पिघला कर
विदाई के क्षणों में अश्रुओं से आखों को भिगोतीं है।
वो भी तो एक बेटी ही होती है ।

* * * * * *

इलाहाबादी मतवाला

सर्वेश कुमार सिंह
तकनीकी अधिकारी-सी, बीएसटीजी

थोड़े दिन तक रहता बचपन, खेल-कूद जाने वाला।
सदा जवानी भी न रहती, गमन ज़रा देने वाला।।
दु:खद ज़रा का अंत शून्य में, नये सृजन हित होता है।
ऐसे वृद्धों की सेवा कर, शोभा पाता मतवाला।।

कभी नमाजी, कभी समाजी, कभी पुजारी वह आला।
कभी लुटेरा, कभी चितेरा, कभी मदाही वह काला।
जाति-धर्म से मुक्त कभी वह, कभी बाल योगी बनकर,
कभी रुलाता, कभी हँसाता, कभी जगाता मतवाला।।

मंदिर मस्जिद गिरजा सबका, मान सदा करने वाला।
भेद-भाव की जंजीरों को, खुद खंडित करने वाला।।
घट-घट में साईं सत् एकल ऐसा जिसने जान लिया।
वही पुजारी, वही मनीषी, वही तपस्वी मतवाला।।

उसे कोई परवाह नहीं, वह भारत का रहने वाला।
कदम-कदम पर पी लेता है, मानवता की मृदुतला।।
तिलभर बहक नहीं सकते पग, नियत राह पर चलता है।
दूरदृष्टि-संधान निराला, योग सिखाता मतवाला।।

जिसने सिंहासन को छोड़ा, तोड़ दिया प्रेमी-माला।
वही रही अब चाह कोई भी, गंगाजल लगता हाला।।
मान-प्रतिष्ठा, नाते-रिश्ते, माया-ममता त्याग दिया।
तब से ज्ञान-पुंज उर भीतर, देख रहा वह मतवाला।।

* * * * * *

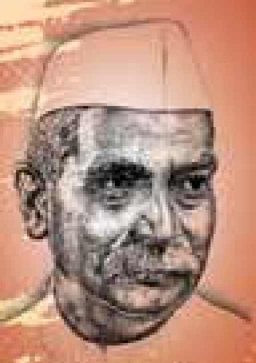

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण
किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

*****

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं
है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

योग दर्शन

शशिकुमार के के
वैज्ञानिक/इंजी-एससी, एनएसजी/
एलवीआईएस &

शौभिक घोष
वैज्ञा/इंजी-एससी, एपीएनटीडी

1. योग का शाब्दिक अर्थ

योग शब्द संस्कृत मूल शब्द 'युज'से लिया गया है जिसका अर्थ है 'एकजुट होना', 'जोड़ना' या 'जुड़ना'। योग एक प्रस्थान या वियोग का अनुमान लगाता है, जो स्वयं को उसके वास्तविक स्वरूप, यानी पुरुष से अलग करना है। योग और कुछ नहीं बल्कि स्वयं का वास्तविक स्व से मिलन है। एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में, योग व्यक्ति के आत्म (जीवात्मा) को पारलौकिक आत्मा (परमात्मा) के साथ मिलाने के लिए है। स्वयं के अपने वास्तविक स्वरूप से वियोग/विघटन से स्वयं को तीन प्रकार के कष्ट (अध्यात्मिका, अधिभौतिक और अधिदैविक) उत्पन्न होते हैं। एक प्रकार से योग की प्रक्रिया सभी कष्टों को दूर करने के लिए है।

2. योग की परिभाषा

2.1योग सूत्र

पतंजलि ने योग को 'चित्तवृत्ति निरोध:' के रूप में परिभाषित किया है। इस परिभाषा में तीन शब्द शामिल हैं – चित्त, वृत्ति और निरोध। पहला शब्द चित्त एक अवधारणा है जिसमें मन, बुद्धि और अहंकार शामिल हैं और यह कार्यशील मन है। दूसरा शब्द वृत्ति का अर्थ है 'अस्तित्व में रहना'और इस प्रकार चित्त-वृत्ति का अर्थ है कार्यशील मन का अस्तित्व। एक कार्यशील मन अपने संशोधनों के माध्यम से मौजूद हो सकता है और इस प्रकार हम चित्तवृत्ति को मन के संशोधनों के रूप में मान सकते हैं। तीसरा शब्द निरोध है, जिसका अर्थ है 'रोकना'। योग चित्त वृत्ति निरोध का अर्थ है मन के संशोधनों की समाप्ति। यह उच्चतम अवस्था है जहाँ व्यक्ति शरीर, मन और आत्मा के सामंजस्य का अनुभव करता है।

2.2 भगवद् गीता

भगवद् गीता को योग पर सबसे स्वीकृत और आधिकारिक ग्रंथों में से एक माना जाता है। भगवद् गीता में योग को कई स्थानों पर परिभाषित किया गया है। दूसरे अध्याय के अड़तालीसवें श्लोक में, योग को संतुलन की स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें सफलता और असफलता से कोई फर्क नहीं पड़ता।

योगस्थ: कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा घनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्यो:समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

"हे अर्जुन! योग में दृढ़ रहो। अपने कर्तव्य का पालन करो और सफलता या असफलता से सभी लगाव को त्याग दो। मन की ऐसी समता को योग कहते हैं।"

यह श्लोक जीवन के उतार-चढ़ाव का एक बहुत ही व्यावहारिक समाधान है। अगर हम समुद्र में हैं, तो समुद्र की लहरों से नाव को हिलाने की उम्मीद करना स्वाभाविक है। अगर हम हर बार नाव हिलते हुए परेशान हो जाते हैं, तो हमारे दुख अंतहीन होंगे। और अगर हम लहरों के उठने की उम्मीद नहीं करते हैं, तो हम उम्मीद करेंगे कि समुद्र अपने प्राकृतिक स्वरूप के अलावा कुछ और हो जाएगा। लहरें समुद्र काअविभाज्य अंग हैं। इसी तरह, जब हम जीवन के सागर से गुजरते हैं, तो यह सभी प्रकार की लहरें हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। अगर हम नकारात्मक स्थितियों को खत्म करने के लिए संघर्ष करते रहेंगे तो हम दुख से बच नहीं पाएँगे। लेकिन अगर हम अपने सर्वोत्तम प्रयासों का त्याग किए बिना, हमारे रास्ते में आने वाली हर चीज़ को स्वीकार करना सीख सकते हैं, तो हम भगवान की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे, और यही सच्चा योग होगा।

इसी प्रकार, दूसरे अध्याय, पचासवें श्लोक में कहा गया है कि एक योगी जो केवल कर्मों से चिंतित रहता है और उसके परिणामों से अचिंतित रहता है, वह हमेशा के लिए बंधन पर विजय प्राप्त करता है।

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम्।।

“भक्ति में लगा हुआ मनुष्य इस जीवन में भी अच्छे और बुरे दोनों कर्मों से मुक्त हो जाता है। इसलिए हे अर्जुन! योग के लिए प्रयास करो, जो सभी कार्यों की कला है।”

3. दर्शनशास्त्र में योग

योग को षड् दर्शनों (भारतीय दर्शन के छह रूढ़िवादी विचारों) में से एक माना जाता है। गौतम का न्याय, कणाद का वैशेषिका, कपिल का सांख्य, पतंजलि का योग, जैमिनी का पूर्व मीमांसा और बादरायण का उत्तरमीमांसा भारतीय दर्शन के छह सिद्धांत हैं। छह दर्शनों में से, सांख्य और योग निकटता से जुड़े हुए हैं और अक्सर इनका उल्लेख सांख्य-योग प्रणाली के रूप में किया जाता है, न कि केवल सांख्य या स्वतंत्र रूप से योग। सांख्य प्रणाली (वास्तविकता का भौतिक सिद्धांत) और पुरुष (वास्तविकता का आध्यात्मिक सिद्धांत) के द्वैतवाद की वकालत करती है। यह शाश्वत प्रकृति से ब्रह्मांड के विकास में विश्वास करता है। यह भी कहा जाता है कि सांख्य योग की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि है और योग सांख्य का व्यावहारिक दृष्टिकोण है। ईश्वर की अवधारणा का उल्लेख सांख्य में कहीं नहीं है, जबकि ईश्वर का योग में स्पष्ट रूप से उल्लेख है। उस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि सांख्य की तुलना में योग आस्तिक है। सांख्य-योग कार्य-कारण के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है जिसे सत्कार्यवाद के रूप में जाना जाता है जो न्याय-वैशेषिक प्रणाली के ठीक विपरीत है जो असत्कार्यवाद का अनुसरण करता है। सत्कार्यवाद दो प्रकार का होता है, परिणामवाद और विवर्तवाद। परिणामवाद का कहना है कि कारण स्वयं को प्रभाव में बदल देता है, जबकि विवर्तवाद कहता है कि प्रभाव केवल कारण की अभिव्यक्ति है और कारण अपरिवर्तित रहता है, यह कार्य-कारण का अद्वैत सिद्धांत है। परिणामवाद फिर से दो प्रकार के हैं : प्रकृति और ब्रह्म-परिणामवाद। प्रकृति परिणामवाद के अनुसार, ब्रह्मांड का भौतिक कारण प्रकृति है और वस्तुओं की दुनिया प्रकृति का उत्पाद है। सांख्य प्रकृति परिणामवाद में विश्वास करता है। ब्रह्म परिणामवाद में, ब्रह्म ही दुनिया है। विशिष्टाद्वैत ब्रह्म परिणामवाद में विश्वास करता है।

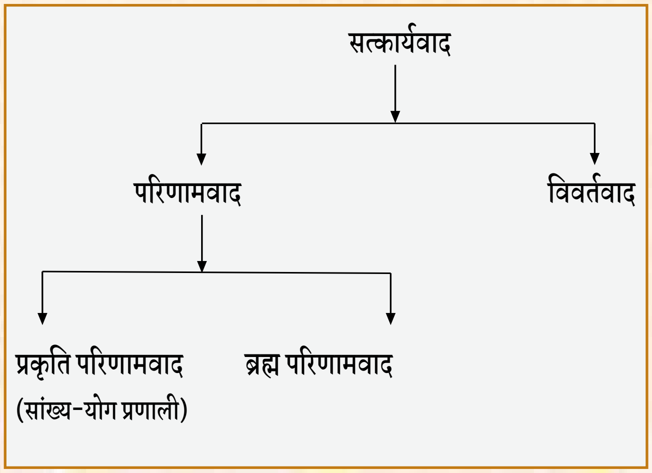

* * * * * *

अफगान समस्या और भारत की चुनौतियाँ

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

1. प्रस्तावना

अगस्त, 2021 में अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के हवाई अड्डे पर भारी भीड़ उमड़ी पड़ी थी। लोग किसी तरह अपनी जान बचाकर देश छोड़ना चाहते थे। यहाँ तक कि विमानों के ऊपर चढ़कर भी लोग भाग जाना चाहते थे। कई लोगों की ऐसे हादसों में मौत भी हो गई। बेकाबू भीड़ को नियंत्रित करने के लिए गोलियाँ चलानी पड़ी तथा कई जानें भी गईं। आखिर लोग इस तरह बेतहाशा क्यों भागे जा रहे थे ? कारण यह था कि तालिबान ने पुन: अफगानिस्तान के शासन पर कब्ज़ा कर लिया था। 20 वर्षों से वहाँ स्थित अमेरिकी सेना की नियोजित वापसी की तारीख यानि 31 अगस्त, 2021 आने के पूर्व ही तालिबान ने वहाँ कब्ज़ा कर लिया था। यह वही तालिबान है जिसने 1996 से 2001 के मध्य अपने शासन के दौरान क्रूरता की सारी हदें पार कर दी थीं, मानवाधिकारों, विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों के अधिकारों की बलि चढ़ा दी थी एवं अफगानिस्तान को आतंक की शरणस्थली बना दिया था। अफगानिस्तान के नागरिक इसी बर्बरता को याद करके अपनी अंतिम साँस को बस बचाकर वहाँ से निकल जाना चाहते थे।

2. ऐतिहासिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि

यह तो सर्वविदित है कि द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ में आपसी वर्चस्व की होड़ ने विश्व को द्विध्रुवीय बना डाला था। भारत सहित कई विकासशील देशों ने गुटनिरपेक्ष आंदलन के ज़रिए बेशक एक तीसरा आयाम देने की भरसक कोशिश की। बहरहाल, अफगानिस्तान दोनों महाशक्तियों के शीतयुद्ध के कारण प्रभावित होनेवाले क्षेत्रों का एक अप्रतिम उदाहरण है।

अफगानिस्तान की सीमा तत्कालीन सोवियत संघ से मिलती थी। जैसा कि विदित है कि सोवियत संघ में साम्यवादी शासन था तथा उससे सटे देशों, यथा पूर्वी यूरोप, मध्य एशिया के देशों पर भी सोवियत संघ ने अपना प्रभाव बनाया हुआ था और उन देशों में भी प्राय: साम्यवादी शासन रहा था। अफगानिस्तान भी इससे अछूता नहीं रहा। अप्रैल, 1978 में राष्ट्रपति मोहम्मद दाउद खान की मध्यम-मार्ग की विचारधारा वाली सरकार को अपदस्थ कर वामपंथी सैनिक अधिकारियों ने सत्ता पर कब्ज़ा कर लिया। दो मार्क्सवादी- लेनिनवादी समूहों-खलक दल एवं परचम दल, जो कि एक ही संगठन पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी से छिन्न-भिन्न होकर बने थे- ने साझेदारी की सरकार बनाई। इस सरकार ने सोवियत संघ से अच्छी मैत्री बना ली और सभी घरेलू विरोधियों का दमन करना शुरू कर दिया। इस सरकार के द्वारा भू-सुधारों एवं सामाजिक सुधारों के लिए उठाए गए कई कदम कट्टर इस्लामिक संगठनों एवं अधिकांश गैर-साम्यवादी जनता को नागवार गुज़रे और उनका विरोध

शुरू हो गया। विभिन्न कबीलों एवं शहरी लोगों ने सरकार के विरुद्ध गृहयुद्ध छेड़ दिया। ये संगठन सामूहिक तौर पर 'मुजाहिद्दीन' कहलाए। इन सब परिस्थितियों में दिसंबर, 1979 में सोवियत सेना ने अफगानिस्तान पर हमला बोल दिया। बाद में सोवियत मदद से डॉ. नजीबुल्ला के नेतृत्व में 'डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ अफगानिस्तान' की घोषणा हुई। भारत इस सरकार को मान्यता देने वाला एवं सोवियत सेना की अफगानिस्तान में उपस्थिति को समर्थन देनेवाला एकमात्र दक्षिण एशियाई देश था। डॉ.नजीब ने सामाजिक सुधारों तथा मानवाधिकारों के लिए कई काम किए। मुजाहिद्दीन ने अब भी उनका विरोध बंद नहीं किया था, परंतु उनकी ताकत सोवियत सेना की उपस्थिति के कारण क्षीण पड़ गई थी। ऐसे में ही, अमेरिका ने अवसर देखा और उसकी मदद के लिए पड़ोसी पाकिस्तान भी एक आदर्श सहयोगी बना। अस्सी एवं नब्बे के दशकों ने अमेरिका ने पाकिस्तान को अरबों डॉलर की सहायता भेजी जिसका अधिकांश हिस्सा मुजाहिद्दीन को आर्थिक और सामरिक सहायता प्रदान करने में खर्च होता रहा।

सोवियत संघ भी नब्बे के दशक के दस्तक देते-देते विघटन के कगार पर खड़ा था। एक दशक के दौरान अफगानिस्तान में तैनात हज़ारों सोवियत सैनिकों को भी जानें गँवानी पड़ी थीं। ऐसे में दिसंबर, 1989 में सोवियत सेना ने अफगानिस्तान छोड़ दिया। परिणामस्वरूप, गृहयुद्ध बढ़ गया और इसकी परिणति हुई 1992 में, जब डॉ नजीब की सरकार को अपदस्थ कर दिया गया और मुजाहिद्दीन, जो कि छोटे-छोटे स्वायत संगठनों का एक लुंज-पुंज समूह था, ने वहाँ सत्ता हथिया ली और बुरहानुद्दीन रब्बानी राष्ट्रपति बनाए गए। परंतु, कुछ समय बाद रब्बानी ने पूर्व समझौते के अनुसार सत्ता दूसरे सहयोगियों को सौंपने से मना कर दिया। तब गुलबुद्दीन हिकमतयार और अहमद शाद मसूद के नेतृत्व में कबीलों ने काबुल पर एवं अन्य जगहों पर लगातार बमवारी जारी रखी और सत्तासीन सरकार को कभी चैन नहीं लेने दिया।

ऐसे माहौल में ही, मुजाहिद्दीन का एक हिस्सा, जिसमें अफगान-अरबों का वर्चस्व था, प्रमुखता से उभरा। पाकिस्तान और अमेरिका ने इस समूह को सहायता प्रदान करनी शुरू की जिसके कारण मुजाहिद्दीनों में यह समूह तेज़ी से ऊपर आने लगा। 1994 के अंत आते-आते इस समूह ने एक नए संगठन 'तालिबान मिलिशिया' के गठन की घोषणा की। इस संगठन को सउदी अरब के शेखों से प्रचुर मात्रा में धन-बल की सहायता मिलने लगी। 1996 आते-आते धीरे-धीरे तालिबान ने अफगानिस्तान के अधिकांश भाग पर कब्ज़ा कर लिया। सिर्फ उत्तरी एवं उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, जहाँ 'नॉर्दर्न अलायंस' जो कि हिकमतयार एवं मसूद के कबीलों का सोवियत समर्थित साझा संगठन था, उसके कब्ज़े से अछूता रहा।

1996 से 2001 तक तालिबान ने अफगानिस्तान पर शासन किया, जिस दौरान उसने कट्टर इस्लामी प्रचलनों एवं कानूनों को लोगों पर थोप दिया एवं शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार जैसी मूलभूत सुविधाओं से लोगों को मरहूम कर दिया। विशेषकर महिलाओं के बाहर निकलने पर, उनकी शिक्षा पर, उनके रोज़गार-व्यवसाय पर पाबंदी लगा दी गई। जितनी भी क्रूरताएँ हो सकती थीं, तालिबान उनका पर्याय बन गया।

इसी बीच, अरब धरपतियों एवं अमेरिका की सहायता से ही अल-क़ायदा नामक वैश्विक संगठन सामने आया, जो कि विश्व में इस्लामिक आतंक का पर्याय बन गया। अफगानिस्तान से बेहतर उन्हें कोई शरणस्थली भी नहीं मिल सकती थी। सितंबर, 2001 में जब अल-क़ायदा ने अपहृत विमानों के माध्यम से अमेरिका पर ही हमला कर दिया, तब अमेरिका ने अफगानिस्तान पर आक्रमण कर दिया। नाटो देशों के साथ किए गए इस आक्रमण के कारण दिसंबर, 2001 में तालिबान सत्ता से अपदस्थ हुआ। अल-क़ायदा का सरगना ओजामा बिन लादेन पाकिस्तान में अमेरिकी फौजों के द्वारा मार गिराया गया। 2004 तक

अफगानिस्तान में लोकतंत्र की बहाली हुई, परंतु वर्षों तक गृहयुद्ध एवं बाह्य आक्रमणों के कारण स्थिति जर्जर हो चुकी थी। अमेरिकी सेना की उपस्थिति के कारण सत्ता की कमान कभी भी पूरी तरह अफगानी सरकार के पास नहीं थी। बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका एवं अन्य मित्र देशों ने वहाँ पर पुनर्वास एवं राहत के अभियान छेड़ दिए। निर्वाचित राष्ट्रपति हामिद करजई एवं तदुपरांत अशरफ गनी ने आमजनों के मूलभूत अधिकारों की वापसी एवं उनके पुनरुत्थान के लिए काम करना शुरू कर दिया। इन सब के बावजूद वहाँ कबीलों एवं मुजाहिद्दीन अथवा तालिबान का प्रभाव कभी पूरी तरह खत्म नहीं हो पाया तथा उन्होंने आंतरिक सुरक्षा के लिए समय-समय पर चुनौतियाँ पेश की।

3. तात्कालिक कारण

मई, 2020 में अशरफ गनी दुबारा राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। परंतु, प्रतिद्वंदी अब्दुल्ला अब्दुल्ला ने स्वयं को राष्ट्रपति घोषित कर दिया। बाद में, वैश्विक प्रयासों से दोनों के बीच समझौता हुआ। तालिबान ने यहीं पर अवसर देखा और अब्दुल्ला एवं अमेरिका की तरफ इस वादे से हाथ बढ़ाया कि वे बदली हुई सौम्य राजनीति करना चाहते हैं। अमेरिका पहले से ही वहाँ से अपनी सेना हटाने का मन बना चुका था। अत: अमेरिका, सोवियत संघ, चीन तथा अरब देशों ने मिलकर अफगान सरकार, अब्दुल्ला एवं तालिबान के बीच सत्ता भागीदारी के लिए शांति वार्ता प्रारंभ करायी। शांति के इन प्रयासों के बीच ही तालिबान ने अगस्त, 2021 में सैन्य शक्ति के माध्यम से देश पर कब्ज़ा कर लिया। सितंबर आते-आते आखिरी अमरीकी सैनिक भी अफगानिस्तान छोड़ चुका था एवं तालिबान का आखिरी बचे भू-भाग पंजशीर घाटी पर भी कब्ज़ा हो चुका था। राष्ट्रपति अशरफ गनी रातों रात देश छोड़कर भाग निकले एवं तालिबान ने मुल्ला अखुंद को सत्ता के शीर्ष पर मनोनीत किया। तालिबान का इतिहास अफगानी जनता एवं वैश्विक समुदाय में आशंका के बीज बो रहा है। अपने शुरुआती दिनों में ही तालिबान की कथनी एवं करनी में दिखे अंतर ने इन आशंकाओं को और बलवती कर दिया है।

4. अफगानिस्तान में भारत का योगदान

अफगानिस्तान भौगोलिक एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। यह एक तरफ भारत के प्रतिद्वंदी पाकिस्तान का पड़ोसी है तो दूसरी तरफ ईरान एवं मध्य एशियाई देशों का भी पड़ोसी है। पाकिस्तान के साथ रिश्तों में तल्खी के कारण ईरान एवं अन्य पश्चिमी एशियाई देशों एवं मध्य एशियाई देशों के साथ अच्छे सहकारी संबंधों को बनाने के लिए अफगानिस्तान भारत के लिए बहुत ही ज़रूरी है। विशेषकर, अफगानिस्तान की सीमा कश्मीर जैसे सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र से ज़्यादा दूर नहीं है। ऐसे में भारत हमेशा अफगानिस्तान की घटनाओं से प्रभावित होता रहा है। इसी कारण भारत वहाँ पर शांति का समर्थक रहा है जिसका प्रमाण है कि भारत ने डॉ. नजीब की स्थायित्व लाने वाली सरकार का समर्थन किया था। दूसरी बात, अफगानिस्तान भी वहाँ के अंदरूनी मामलों में पाकिस्तान के अनपेक्षित हस्तक्षेप से नाखुश रहता है। कम-से-कम शांति पसंद जनता तो नाखुश रहती ही है। इसीलिए, अफगानिस्तान की प्रगतिवादी सरकारें भी भारत को हमेशा एक प्राकृतिक साझीदार एवं दोस्त मानती रही हैं।

पिछले दो दशकों में भारत ने अफगानिस्तान की प्रगतिवादी सरकारों को हर समय सहायता प्रदान की है। साथ-ही-साथ वहाँ के पुनर्निर्माण एवं राहत में भारत हमेशा अग्रणी रहा है। अमेरिका द्वारा तालिबान पर हमले के दौरान भारत ने सहयोगी सेनाओं को खुफिया सहायता एवं अन्य रसद सहायता प्रदान की। निर्वाचित सरकार की स्थापना के उपरांत भारत ने वहाँ करीब-करीब तीन बिलियन डॉलर का निवेश किया तथा लगभग 650-700 मिलियन डॉलर की मानवीय सहायता तथा आर्थिक मदद प्रदान की। भारत ने वहाँ बुनियादी ढाँचों के निर्माण में अग्रणी भूमिका अदा

की। चाहे नए संसद भवन का निर्माण हो, चाहे दूर-दराज के इलाकों में सड़कों का निर्माण हो चाहे बंगरगाह, हवाई अड्डा, सिंचाई आदि की व्यवस्था हो, सब में भारत ने काफी सहायता प्रदान की है। भारत-अफगान मैत्री का जीता-जाता उदाहरण 'सलमा डैम' है जिसका शुभारंभ 2016 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं अफगान राष्ट्रपति श्री अशरफगनी द्वारा किया गया। चाबहार बंदरगाह के माध्यम से भारत ने न सिर्फ पाकिस्तान गए बिना अफगानिस्तान, ईरान आदि देशों पर आवाजाही के लिए मार्ग प्रशस्त किया बल्कि भारतीय सहायता अफगानियों तक आसानी से पहुँचाने का द्वार भी खोल दिया। राजनैतिक दृष्टि से भी देखें तो 2005 में भारत के ही प्रस्ताव पर अफगानिस्तान को दक्षिण एशियाई देशों के परिसंघ सार्क में आठवें पूर्णकालिक सदस्य के रूप में शामिल किया गया। संयोगवश, अगस्त, 2021 में अफगानिस्तान में हुए उथल-पुथल के समय भारत ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष था और उसने यह सुनिश्चित करवाया कि तालिबान से यह वादा लिया जाए कि वह शांतिपूर्वक सत्ता हस्तांतरण को अंजाम देगा तथा वैश्विक समुदाय द्वारा वहाँ शांति बहाल करने के प्रयासों में सहयोग देता रहेगा।

5. वर्तमान परिदृश्य में भारत के लिए चुनौतियाँ

वर्तमान परिदृश्य में भारत के सामने सबसे बड़ी तथा सर्वप्रथम चुनौती है कि अफगानिस्तान में चल रहे उथल-पुथल के दौरान विश्व स्तर पर अपने प्रभावों का उपयोग कर यह सुनिश्चित करना कि अफगानिस्तान पुन: एक ऐसी दिशा में न चला जाए जहाँ विध्वंस एवं विनाश की ही कहानी हो। भारत को हर हाल में अफगानिस्तान में विकास एवं शांति का माहौल बनाने के लिए विश्व समुदाय के साथ काम करना होगा।

दूसरी चुनौती है कि तालिबान के आने से पाकिस्तान का अफगानिस्तान पर प्रभाव पुन: बढ़ जाएगा। पाकिस्तान-चीन की जगजाहिर दोस्ती एवं इस उथल-पुथल में चीन की सक्रियता भी चिंता का कारण है क्योंकि चीन अपनी आर्थिक एवं सामरिक ताकत का इस्तेमाल अफगानिस्तान में अपनी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में करना चाहेगा। चुनौती और भी बड़ी है क्योंकि चीन ने रूस को भी इसके लिए विश्वास में ले लिया है। चीन की आर्थिक सक्रियता का तात्कालिक प्रभाव भारत पर काफी अधिक पड़ेगा क्योंकि भारत वहाँ पर निवेश करनेवाले अग्रणी देशों में रहा है तथा आगे निवेश की संभावनाएँ तलाश करने में भी कठिनाइयाँ आएँगी।

तीसरी बड़ी चुनौती है कि जो निवेश भारत ने वहाँ किया है उसकी सुरक्षा की आवश्यकता की। जगजाहिर है कि हक्कानी नेटवर्क, जो कि एक प्रकार से पाकिस्तानी तालिबान के तौर पर काम करता रहा है, पहले भी निर्वाचित सरकार की मौजूदगी में भी अफगानिस्तान में भारतीय प्रतिष्ठानों पर हमले करवाता रहा है और अब पसंदीदा सरकार होने के कारण उसका मनोबल और बढ़ेगा। उदाहरण स्वरूप, चाबहार बंदरगाह के निर्माण के पीछे भारत का अपना निजी उद्देश्य भी था जिनकी सुरक्षा पर अब आशंकाएँ उठ सकती हैं।

अगली चुनौती है कि राजनैतिक रूप से हम तालिबान से कैसे निपटें। तालिबान ने 1999 में भारत में कंधार विमान अपहरण करने में प्रमुख रूप से सहायता की थी। तब से भारत उसे आतंकी संगठन मानता आ रहा है। अब समस्या यह है कि भारत अपने व्यापक निवेशों के कारण अफगानिस्तान से दूर भी नहीं रह सकता है और तालिबान के सत्ता में आने के बाद उसके साथ राजनैतिक संबंध बनाने में हमारे अपने ही पुराने सिद्धांत हमारे रास्ते की बाधा बन रहे हैं। ऐसे में हमें अपने कूटनीतिक प्रयासों में बड़ा संतुलन रखना पड़ेगा ताकि हम वहाँ शांति सुनिश्चित कर अपने राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक हितों की रक्षा भी कर सकें, साथ-ही-साथ, वहाँ पर तालिबानी शासन के दुष्प्रभावों से भी बचे रहें।

सबसे बड़ी समस्या जो भारत के सामने मुँह बाए

खड़ी है कि तालिबान का पुनरागमन भारत में बाह्य प्रायोजित आतंकवाद के पुनरुत्थान का सबक बन सकता है। तालिबान के पिछले शासनकाल के दौरान भी पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी अफगानिस्तान के क्षेत्र का उपयोग आतंकियों के प्रशिक्षण एवं प्रेषण के लिए करता रहा। इस्लामिक कट्टरपंथ के नाम पर अरब धनपतियों का आर्थिक सहयोग भी परोक्ष रूप से इन आतंकियों को मिल सकेगा। इन सबके कारण पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद भारत के विभिन्न हिस्सों में, विशेषकर कश्मीर में, सिर उठाने की कोशिश करेगा। भारत को इन चुनौतियों से होशियार रहना होगा तथा अपनी खुफिया एवं सैन्य सेवाओं को चुस्त-दुरुस्त रखना होगा ताकि इन चुनौतियों का समय रहते तथा पुख्ता तौर पर तोड़ निकाला जा सके। यह समस्या इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि चीन अब अफगानिस्तान के मामलों में ज्यादा सक्रियता दिखा रहा है। पिछले साल चीन ने लद्दाख तथा अरुणाचल के सीमावर्ती इलाकों में सैन्य गतिविधियाँ तेज़ कर दी थीं जिसके कारण सीमा पर तनाव की स्थिति बनी हुई है, परन्तु सेना के जवानों के अदम्य साहस तथा निगहबान आँखों के कारण स्थिति नियंत्रण में हैं। वर्तमान परिस्थितियों में चीन-पाकिस्तान-तालिबान की तिकड़ी हमारी सुरक्षा एवं शांति में बाधक बनने का भरपूर प्रयास करेंगे। इन कोशिशों को नाकाम करना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. चुनौतियों को खत्म करने के लिए आवश्यक उपाय

भारत के सामने अनेक चुनौतियाँ है, परन्तु भारत की छवि एक शांतिप्रिय देश एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ लोकतंत्र की रही है। भारत इन चुनौतियों से लड़ने में एवं उनसे पार पाने में पूरी तरह से सक्षम है। फिर भी, कुछ बुनियादी बातों को हमें सदैव ध्यान रखना होगा।

भारत विश्व के प्रमुख संगठनों यथा संयुक्त राष्ट्र, जी-20, क्वाड, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन एवं सार्क का सम्मानित सदस्य रहा है। भारत की अपेक्षाकृत उन्नत एवं सुदृढ़ आर्थिक स्थिति भी विश्व में एक विश्वास जगाती है। भारत को अपने प्रभावों का प्रयोग अफगानिस्तान में शांति एवं विकास की बहाली के लिए उठाए जाने वाले कदमों की दिशा में करना चाहिए तथा व्यापक राजनैतिक साझेदारी से इन प्रयासों में अग्रणी भूमिका अदा करनी चाहिए। साथ-ही-साथ तालिबान सरकार से भी एक हद तक साझेदारी बनाए रखनी चाहिए। इसके अतिरिक्त विश्व स्तर पर हमें प्रयास करने चाहिए कि आतंकी संगठनों को मिलने वाली आर्थिक एवं सामरिक सहायता पर अंकुश लगाया जा सके।

इसके लिए भारत को ईरान, रूस आदि देशों का साहचर्य लेना चाहिए। चीन से सहयोग के अवसर की तलाश करनी चाहिए एवं अफगानिस्तान के भविष्य निर्माण में अमेरिका से बराबरी का तालमेल बनाए रखना चाहिए।

साथ-ही-साथ तालिबान सरकार को शांतिपूर्ण प्रयासों की तरफ प्रेरित कर अफगानिस्तान में बुनियादी ढाँचे में निवेश तथा वहाँ रोज़गार एवं सैन्य प्रशिक्षण देने पर बल देना चाहिए।

जहाँ तक आतंकवाद की चुनौतियाँ है, तो हमें पूरी तरह से मुस्तैद रहना चाहिए। हमारी एक कमज़ोरी आतंकियों को कई अवसर प्रदान करेगी। अत: भारत के अंदर भी यह माहौल बनाना चाहिए कि हम सब एकजुट रहें तथा चुनौतियों से लड़ने के लिए तत्पर एवं सक्षम रहें।

7. उपसंहार

अफगानिस्तान की वर्तमान स्थिति भारत के लिए अवश्य चिंताजनक है। इन परिस्थितियों में चुनौतियाँ तो बहुत हैं, लेकिन भारत का इतिहास रहा है कि इन चुनौतियों से हम हमेशा लड़ते रहे हैं, और विजयी भी हुए है। एक शांतिपूर्ण, विकासशील एवं समृद्ध अफगानिस्तान की बहाली भारत की प्राथमिकता है और रहेगी। हमें विश्वास है कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में हम सफल होंगे।

* * * * * *

आदित्य-एल 1 अभियान में प्रयुक्त जड़त्वीय निर्देश एवं त्वरणमापी पैकेज (आईआरएपी-300) गुणता आश्वासन एवं परीक्षण और मूल्यांकन

सोनी मोहन
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

1. भूमिका

जड़त्वीय निर्देश वं त्वरणमापी पैकेज (आईआर एपी-300), आईआरएपी-200 की उन्नत अभिकल्प है। इस पैकेज में रव तुल्य कोण के विनिर्देश 0.1 आर्कसेकेंड और अल्पकाल स्थायित्व के विनिर्देश 0.008 डिग्री/घंटा हैं। आईआरपी-200 में ये दो आँकड़े यथाक्रम 1 आर्कसेकेंड और 0.05 डिग्री/घंटा हैं। इसका मतलब हैं कि आईआरएपी-300 का निष्पादन आईआरएपी-200 से दस गुण बेहतर हैं। आईआरएपी-300 के इस्तेमाल से उपग्रह के 3 प्रमुख अक्ष पाक्षवर्तन, लोट और अक्षनमन के साथ वृद्धि कोण के आँकड़े प्राप्त होते हैं। इस पैकेज के ज़रिए लोट अक्ष के 450 विषमतलीय अक्ष के साथ वृद्धि वेग के आँकड़े भी हर 32 मिली सेकेंड एओसीई को प्राप्त होते हैं। यह पैकेज आदित्य-एल1 के सभी प्रचालनों के समय एवं द्रव अपभू मोटर (एलएएम) ज्वलन के समय वेग मंच विच्छेद के लिए प्रयुक्त होगा।

आईआरएपी-300 में गतिकीय समस्वरित घूर्णाक्ष स्थापी (डीटीजी) और सेरामिक सर्वो त्वरणमापी (सीएसए) नामक दो तरह के संवेदकों का उपयोग किया गया है। डीटीजी अभिवृत्ति/दर मापन के लिए और सीएसए वेग मापने के लिए प्रयुक्त है। इसकी इलक्ट्रॉनिकी का रूप तीन निराश्रित श्रृखला में डीटीजी-1 की इलक्ट्रॉनिकी और सीएसए का संकेत संसाधन चरण (अतिरिक्त) है और तीसरे श्रृखले में एमडीटीजी-3 की इलक्ट्रॉनिकी है। पहले और दूसरे श्रृखले में प्रमुख और अतिरिक्त पुंज ताप नियंत्रक है।

इस लेख में आईआरएपी-300 के गुणता आश्वासन तकनीकों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

2. गुणता आश्वासन तकनीकें

इलेक्ट्रॉनिकी प्रणाली की विश्वसनीयता बढ़ाने के कई तरीके होते हैं जैसे न्यूनतम घटक का उपयोग करना अभिकल्प में निम्न इत्यादि देना, क्रांतिक जगहों में अतिरिक्तता देना आदि। आईआरएपी के गुणता आश्वासन के लिए विभिन्न तकनीकें जैसे एफएमईसीए (फ़ेल्युर मोड फेक्ट्स एवं कृटिकालिटी एनालिसिस), अनुमतांक निम्नन विश्लेषण और विश्वसनीयत पूर्वा-सूची का उपयोग किया गया है।

2.1 एफएमईसीए

अभिकल्प की कमज़ोर कड़ी को ढूँढने के लिए एफएमईसीए (फ़ेल्यर मोड एफेक्ट्स एवं कृटिकालिटी एनालिसिस) का उपयोग करते हैं। इसके दो चरण होते हैं। पहला विफलता विधा का प्रभाव और विश्लेषण है और दूसरा क्रांतिकता का विश्लेषण है। यह एक गुणात्मक प्रविधि है जिसमें तंत्र की हर विफलता विधा और उसके कारण तंत्र पर होने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। क्रांतिकता विश्लेषण में हर संभाव्यता विफलता को उसकी गंभीरता और होने की संभावना के आधार पर स्थाति करते हैं। पहली श्रेणी में आपत्तिजनक विफलता आती है जिसके कारण उपग्रह नष्ट हो सकता है। दूसरी श्रेणी में महत्वपूर्ण विफलता आती है जिससे उपग्रह का निष्पादन निम्नीकृत हो सकता है। तीसरी श्रेणी में सीमांत विफलता आती है जो पहली दोनों श्रेणियों में नहीं आते हैं। एफएमईसीए के लिए एमआईएल एसटीडी-1629 का उपयोग किया जाता है। आईआरएपी-300 इलेक्ट्रॉनिकी की घटक विफलता के कारण अभियान में कोई प्रभाव नहीं होगा क्योंकि इसमें चैनल अतिरिक्तता है।

2.2 अनुमतांक निम्नन विश्लेषण

घटक पर आनेवाले वैद्युत, तापीय, यांत्रिक और अन्य पर्यावरण प्रतिबल को घटाकर उसकी गिरावट की दर को कम करके उसकी आयु बढ़ाने को हम अनुमतांक निम्नन कहते हैं। इससे सक्रिय प्रतिबल और अनुज्ञेय प्रतिबल के बीच की सुरक्षा का मापदंड हम बढ़ा सकते हैं। घटक निम्नन के लिए हम घटक पर आनेवाले प्रतिबल को कम कर सकते हैं या उच्चतर निर्धारण वाले घटक का उपयोग कर सकते हैं। भिन्न घटकों और उनके अनुप्रयोगों के लिए भिन्न अनुमतांक निम्नन कार्यविधियाँ विद्यमान हैं।

- प्रतिरोधक के अनुमतांक निम्नन के लिए प्रचालन शक्ति को कम करते हैं।
- संधारित्र के अनुमतांक निम्नन के लिए अनुप्रयुक्त वोल्टता कम करते हैं।
- अर्धचालक के अनुमतांक निम्नन के लिए शक्ति क्षय और संग्राहित्र धारा को कम करते हैं।

अनुमतांक निम्नन के लिए प्रतिबल का सर्वाधिक बुरी संख्या या अनुमान लेते हैं। यह विश्लेषण "ई ई ई पार्ट्स स्ट्रैस डिरेटिंग गाइडलाइंस फोर आईएसआरओ सैटिलाइट प्रोग्राम" (नबंर. आईएसआरओ-आईएसएसी-ST-0119) नामक दस्तावेज़ के आधार पर किया गया है। आईआरएपी-2 इलेक्ट्रॉनिकी के सभी घटक निम्नन मार्गदर्शन के अनुसृत है। 60% से अधिक घटक 10% दिशानिर्देश के भीतर है।

2.3 विश्वसनीयता पूर्व सूचना

आईआरएपी इलेक्ट्रॉनिकी की विश्वसनीयता पूर्व-सूचना प्रतिबल विश्लेषण विधि के अनुसार की गई है। इसके लिए घोषित घटक सूची और सीसीडी के आधार पर की गई है। इसके लिए एमआईएल-एच डीबी के 217 मापदंडों का उपयोग किया गया है।

3. उड्डयन मॉडल आइआरएपी-300 का परीक्षण

जो मॉडल उपग्रह में प्रयुक्त है उसे उड्डयन मॉडल कहते है। कारीगरी के खोट बाहर लाने के लिए स्वीकरण

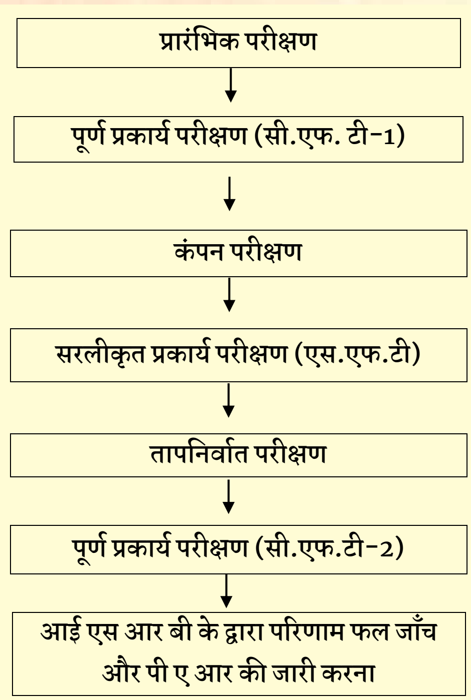

चित्र 1 : उड्डयन मॉडल आई आर ए पी का परीक्षण अनुक्रम

परीक्षण किया जाता है। उड़ान के लिए निर्बाधन देने के लिए आईआरएपी-300 का परीक्षण और मूल्यांकन चित्र-1 के अनुसार किया गया है।

3.1 प्रारंभिक परीक्षण

प्रारंभिक परीक्षण के अंतर्गत भौतिक जाँच (द्रव्यमान और विस्तार मापन), विद्युत रोधन मापन आदि किया जाता है।

3.2 पूर्व प्रकार्य परीक्षण (सी.एफ.टी)-1

इसके अंतर्गत निम्न लिखित परीक्षण किए जाते हैं।

- रव तुल्य कोण मापन
- विद्युत प्रदाय विचरण परीक्षण
- लब्धि अवधि और क्षीण अवधि का मापन
- कोणीय त्वरण परीक्षण
- अनुरूप दर मापन
- परास स्विच मापन
- अधिकतम दर क्षमता परीक्षण
- दर परीक्षण
- बहु स्थिति परीक्षण
- तापनियंत्रक का परीक्षण

3.3 कंपन परीक्षण

प्रमोचन के समय उपतंत्र पर कंपन भार का अनुभव होता है। उड़ान के दौरान उड्डयन मॉडल पर स्वीकरण स्थिति यादृच्छिक कंपन परीक्षण किया गया है। कंपन परीक्षण ई टी एल सी स्तर के अनुरूप किया गया है।

3.4 सरलीकृत प्रकार्य परीक्षण (एस एफ टी)

कंपन परीक्षण के पश्चात् उपतंत्र की स्थिति की जाँच करने के लिए सरलीकृत प्रकार्य परीक्षण किया गया है। इसमें पूर्ण प्रकार्य परीक्षण-1 के मुख्य परीक्षण जैसे बहु स्थिति परीक्षण, दर परीक्षण, रन-अप और रन डाउन मापन किया गया है।

3.5 तापनिर्वात परीक्षण

इस परीक्षण का मुख्य उद्देश्य ताप और निर्वात की चरम परिस्थिति में पैकेज के भागों और कारीगरी की कमी बाहर लाना है। प्रतिरूपी तापनिर्वात चक्रण प्रोफाइल में 2 घंटे के अल्पकाल ऊष्ण-शीत अल्प अवधि चक्र और इसके बाद 24 घंटे के दीर्घ अवधि चक्र है। इस परीक्षण के लिए एक तापनिर्वात कक्ष जिसमें 1x10-6 मिली बार की कोटि का दाब कायम होने की आवश्यकता है।

<u>परीक्षण स्तर</u>

2 घंटे शीत (आधार पट्टिका : -15°C) और 2 घंटे ऊष्म (आधार पट्टिका : 40°C) के पाँच चक्र

24 घंटे शीत (आधार पट्टिका : -15°C) और 24 घंटे ऊष्म (आधार पट्टिका : 40°C) का एक चक्र

परीक्षण के द्वारा जायरो ताप 20°C से ज़्यादा और 60°C से कम रहना चाहिए।

3.6 पूर्ण प्रकार्य परीक्षण (सीएफटी)-2

पूर्ण प्रकार्य परीक्षण-1 में किए गए सभी परीक्षण पूर्ण प्रकार्य परीक्षण-2 में दुहराए आते हैं। पूर्ण प्रकार्य परीक्षण-2 के बाद परीक्षणों के परिणाम इसरो जड़त्वीय तंत्र पुनरीक्षण बोर्ड (आईएसआरबी) के सामने प्रस्तुत किया जाते हैं। आईएसआरबी उपग्रह के साथ उपतंत्र के एकीकरण के लिए अनुमति देता है। इसके बाद उपतंत्र मूल्यांकन रिपोर्ट (पीएआर) के साथ उपग्रह से एकीकरण के लिए इसरो के दूसरे केंद्र (यूआरएससी, बैंगलूर) भेजा जाता है।

4. उपसंहार

इस लेख में आदित्य-एल1 में प्रयुक्त जड़त्वीय निर्देश एवं त्वरणमापी पैकेज (आईआरएपी-300) के गुणता आश्वासन के लिए उपयुक्त तकनीकों एवं परीक्षण और मूल्यांकन का विवरण दिया गया है। इन गुणता आशावासन तकनीकों एवं परीक्षण की सहायता से अंतरिक्ष में लगभग पचास से ज़्यादा आईआरयू और आईआरएपी विभिन्न उपग्रहों में सफलता पूर्वक काम कर रहे हैं।

* * * * * *

रिंपी कुमारी, श्री प्रेम प्रकाश की पत्नी
वरि.तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

भारत में कोविड टीकाकरण- लक्ष्य और चुनौतियाँ

प्रस्तावना

साल 2019 में शुरू हुई कोरोना की वैश्विक महामारी से लड़ते हुए आज 2 वर्ष से अधिक बीत चुके हैं। कोविड टीकाकरण को एक मात्र विकल्प मानकर कई देशों ने अपनी क्षमताओं के अनुसार विभिन्न नामों से टीके का उत्पादन भी किया है। भारत भी कोविड टीके के उत्पादन में अग्रणी है। भारत में चरणबद्ध तरीके से जनवरी 2021 में आरंभ किए गए विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान में तब तेज़ी लाई गई जब कोरोना की दूसरी लहर ने यहाँ तबाही मचाई। टीकाकरण से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मानसिक व तकनीकी चुनौतियों से जूझता हुआ संवेदनशील भारत समय-समय पर टीकाकरण के लिए निर्धारित लक्ष्यों में बदलाव करता आ रहा है। वैसे तो टीके की आवश्यकता 130 करोड़ भारतीय नागरिकों को है किंतु आए दिन टीकाकरण के प्रस्तुत आँकड़े निर्धारित लक्ष्य से कम ही देखे जा रहे हैं।

तीसरे लहर का स्वरूप जैसा भी हो, समय की माँग यही है कि सारी चुनौतियों से लड़ते हुए भारत में टीकाकरण को प्रभावी, व्यापक और तेज़ किया जाए।

टीकाकरण के लक्ष्य

विकसित देशों से परे, दूसरे सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश भारत में कोविड टीकाकरण अभियान विलंब से शुरू हुआ। पहले चरण में स्वास्थ्य कर्मियों/ जन अधिकारियों तथा दूसरे चरण में 60 वर्ष से ऊपर के वरिष्ठ नागरिकों को तथा तीसरे चरण में 45 वर्ष से अधिक उम्र के वयस्कों को वरीयता देने के बाद अगस्त 2021 तक लगभग 30 करोड़ लोगों के टीकाकरण का लक्ष्य भी अधूरा रह गया। अलग तरह के लक्ष्य स्वरूप भारत ने अन्य देशों के विपरीत टीके का निर्यात अनुदान व वाणिज्यिक आपूर्ति के रूप में भी किया जिस पर अप्रैल के बाद रोक लगा दी गई है और इस साल के अंत तक पुन: आरंभन सुनिश्चित नहीं है। जुलाई में 4.3 मिलियन से लेकर अगस्त में 6 मिलियन प्रतिदिन की दर पार कर आज की तारीख में 100 करोड़ से अधिक टीके मुहैया कराये जा चुके हैं जो विश्व भर में सबसे तेज़ है। गणना से पता चलता है कि इस दर से साल के अंत तक पूरी जनसंख्या के 45% का भी टीकाकरण नहीं किया जा सकेगा, जबकि सरकार ने सभी पात्र भारतीयों का दिसंबर 2021 तक टीकाकरण परिलक्षित किया है। यदि टीके के दो पूर्ण खुराक लेने वालों की बात करें तो लगभग 25% जनसंख्या ही इसमें शामिल है। टीके की कमी आपूर्ति के लिए भारत में कोविशील्ड, कोवाक्सिन के अलावे अधिक प्रभावशाली स्पुट्निक-V भी मुहैया कराये जा रहे हैं। तीसरी लहर का असर कम देखा जा

सके इसके मद्देनज़र मोडरना टीके के आयात की अनुमति भी दे दी गई है। साथ ही कोविशील्ड तथा कोवाक्सिन के घरेलू उत्पादन को व्यापक व सुदृढ़ करने की पहल भी जारी है।

प्रति माह 110 से 120 मिलियन कोविशील्ड और 10 मिलियन कोवाक्सिन टीकों के कमतर उत्पादन क्षमता होने के बावजूद भारत सरकार का लक्ष्य है कि अगस्त से दिसंबर 2021 के बीच कम से कम दो सौ करोड़ टीके के खुराक तैयार किए जाएँ। संभवत: अन्य टीकों को भारत में मान्यता मिलते ही टीकाकरण का ग्राफ ऊपर जा सकता है।

टीकाकरण – चुनौतियाँ

टीकाकरण लक्ष्य की लब्धता के मार्ग में भारत के समक्ष अनेक चुनौतियाँ है। विकसित देशों ने आत्मकेंद्रीकरण भावना के तहत टीके के अतिरिक्त भंडारण कर भारत जैसे देश के लिए टीके की कमी पैदा कर दी है। इतनी विशाल जनसंख्या के लिए टीके उपलब्ध कराना तो मुश्किल है ही, परंतु उससे अधिक जटिल है लोगों को टीका लगवाने के लिए सहमत करवाना। टीका लगवाने से मनाही 'टीका हिचक' के रूप में जाना जाता है जिसके प्रमुख कारण अविवेकपूर्ण सोच, गलत धारणाएँ, धार्मिक पहलू, अफवाह और आज की तारीख में व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी है। भारत की अधिकतर जनता ग्रामीण क्षेत्रों में बसर करती है जहाँ टीके के फायदे बताने वाला कोई नहीं। उलटे टीके लगाने वाले जन सेवक जब उन क्षेत्रों में पहुँचते हैं तो उन्हें दौड़ाकर पीटा जाता है। टीके के हल्के दुष्परिणाम तो होते ही हैं परंतु कोरोना से रक्षा ज्यादा प्रभावी होती है, इसकी जानकारी केवल उन्हें ही मिल पाती है जो चिकित्सक से सलाह ले पाते हैं।

भारत में स्वास्थ्य सुविधाएँ विशेषकर गाँवों, कस्बों व छोटे शहरों में लचर है जिसके वजह से लोग न कोरोना की जाँच कराते हैं न ही इनका टीकाकरण हो पाता है। टीके लगाने वाले जन सेवक कितने प्रशिक्षित किए गए, यह भी एक चुनौती है। कुछ ऐसी भी घटनाएँ सामने आई हैं जहाँ टीकाकरण केंद्र पर एक व्यक्ति को 5 मिनट के अंतराल पर 2 अलग-अलग प्रकार के टीके लगा दिए गए।

टीकाकरण के पूर्व ' कोविनपोर्टल पंजीकरण' सरकार की पहल अच्छी है किन्तु अल्प शिक्षित लोगों तक डिजिटल पहुँच अब तक नहीं है। आँकड़े बताते हैं कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ टीके के प्रति कम आकर्षित हैं। लैंगिक असमानता इसका प्रमुख कारण है।

आर्थिक चुनौती के रूप में कोविशील्ड टीके की उत्पादन क्षमता को 10 करोड़ खुराक प्रति माह से आगे बढ़ाने के लिए तीन हज़ार करोड़ के अनुदान की आवश्यकता है। भारत में अन्य अंतर्राष्ट्रीय टीकों को मंज़ूरी देने की प्रक्रिया को सहज व तीव्र करने की भी आवश्यकता है जिससे कि आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके। भारत में टीकों के उचित रख-रखाव के लिए अपर्याप्त शीतागार, रसद, कोल्ड चेन सुविधाओं की कमी इत्यादि तकनीकी चुनौतियों को दर्शाती है। तकनीकी कमियों के कारण टीकों की बोतलों को खोलने के बाद पुन: सुरक्षित रखने में दिक्कत आती है और टीके बर्बाद हो जाते हैं।

जब भारत ने अचानक टीकों के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया तब इसका आयात करने वाले देश चीन की ओर रुख करने लगे, इसका विदेशी संबंधों पर भी प्रभाव पड़ने की आशंका है। टीका उत्पादन के लिए कच्चे माल के निर्यात पर अमेरिका द्वारा समय-समय पर प्रतिबंध एक आधारभूत चुनौती के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

भारत की भारी जनसंख्या कोविड टीकाकरण अभियान पर भारी पड़ रही है। निर्धारित लक्ष्य भारत की दक्षता से बाहर मालूम पड़ता है और उस पर आड़े आती हैं- चुनौतियाँ। आधारभूत सुविधाओं को मुहैया कराते हुए टीके के लाभ को रचनात्मक ढंग से जन मानस तक प्रचारित करके कोविड टीकाकरण अभियान को सफल बनाया जा सकता है।

* * * * * *

'प्यार एक सार्वभौमिक भाषा'

जगरूप
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

कहते हैं, एक रिश्ते में परस्पर व्यवहार और भावना प्राणवायु की तरह होते हैं जो किसी भी रिश्ते को जीवन्त रखते हैं। शब्द या भाषा बस एक माध्यम है अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए। परन्तु, यदि व्यवहार शब्दों के विपरीत है तो दूसरा व्यक्ति तुरंत इसको भाँप जाता है। जब हमारा प्यार हमारे व्यवहार में दिखता है तो हमें किसी भाषा की ज़रूरत नहीं होती, अपितु हमारा व्यवहार ही हमारी भाषा बन जाती है। मेरी ये कहानी प्यार की इसी भाषा को अभिभूत करती है। बात मेरे कॉलेज के दिनों की है जब मैं कॉलेज के पास किराए का कमरा लेकर रहता था। कमरा छत पर होने के कारण मेरा ज्यादातर समय छत पर बीतता था, कभी योग के लिए तो कभी सुबह-शाम मौसम का मज़ा लेते हुए पढ़ाई करने में। उस छत पर एक गिलहरी अपने छोटे बच्चे के साथ रहती थी और पशु-पक्षियों के व्यवहार में विशेष रुचि होने के कारण मैं अक्सर उस गिलहरी के व्यवहार को ध्यान से देखता। फिर एक दिन दिल में इच्छा हुई कि क्यों न गिलहरी और उसके बच्चे से दोस्ती की जाए। गिलहरियों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने से पता चला कि उन्हें बादाम गिरी और मूँगफली बहुत पसंद होती है। रोज़ सुबह योग करने से पहले कुछ बादाम या मूँगफली कुछ दूर रख देता। गिलहरी जब आती तो वह दूर से मेरी तरफ देखने लगती। जब भी मेरा ध्यान इधर-उधर होता वो गिरी उठाती और भाग जाती। ये सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। मैं भी अपनी जगह बैठे गिलहरी के व्यवहार का आनंद लेता। कुछ दिनों में गिलहरी वही बैठकर खाने लगी। इसके बाद जब उसने देखा कि मैं ध्यानपूर्वक अपने योग में व्यस्त रहता हूँ तो उसका भी विश्वास बढ़ा। इसके बाद मैंने धीरे-धीरे से बादाम या मूँगफली के दानों को थोड़ा अपने करीब रखना शुरू किया और आँखें बंद करके योग करना शुरू कर देता। एक-दो दिन गिलहरी ने देखा और चुपचाप उन दानों को उठाकर भाग जाती। परन्तु धीरे-धीरे मेरे व्यवहार को देखकर वो वहीं पास में बैठकर खाने लगी और मैं बीच-बीच में देखता। धीरे-धीरे इन कोशिशों के बाद मैं दानों को अपने बिल्कुल पास रखने लगा और आँखे बंद करके बैठ जाता। पहले की तरह गिलहरी एक-दो दिन में मेरे बिलकुल पास बैठकर खाने लगी। यह सिलसिला लगभग दो महीने चला तथा इस बीच गिलहरी अपने बच्चे को भी साथ लाने लगी। फिर एक दिन जब गिलहरी मेरे आसपास रहने में सहज होने लगी तो मैंने बादाम गिरी अपने हाथ पर रखकर उसको खिलाने की कोशिश की परन्तु, जब तक मैं गिलहरी की ओर देखता वो पास बैठी रहती और जैसे ही मैं इधर-उधर देखता, भाग कर उन दानों को उठाकर भाग जाती। मैं भी लगातार कोशिश करता रहा और एक दिन वो मेरे हाथ पर बैठकर आराम से मूँगफली खा रही थी। इस खूबसूरत रिश्ते को बनने में तीन-चार महीने ज़रूर लगे परन्तु इस रिश्ते का एहसास आत्मा में प्रसन्नता और संतुष्टि से आत्मविभोर करने वाला था। उसके बाद वो नन्हीं सी दोस्त अपने बच्चे के साथ मेरे कमरे पर उछलती रहती और नि:संकोच मेरे पास आकर खेलती और खाती। इस प्यारे से रिश्ते ने मेरी इस सोच को और सुदृढ़ किया कि प्यार की भाषा एक सार्वभौमिक भाषा है जिससे आप बिना एक शब्द कहे किसी का भी मन और विश्वास हासिल कर सकते हैं। *

टिप्पणियाँ / NOTINGS

1. इस राशि का बजट में प्रावधान नहीं है।
There is no provision of this amount in the budget.
2. दिए हुए लाइन आइटम कोड में निधि की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
Ensure the availability of fund in the given Line-Item Code.
3. भुगतान करने के लिए मूल बीजक की आवश्यकता है।
Original invoice is required for release of the payment.
4. चिकित्सा दावे की प्रतिपूर्ति की जाए।
Medical claim may be reimbursed.
5. अतिरिक्त भुगतान की वसूली करें।
Recover excess payment.
6. चूककर्ता से स्पष्टीकरण मांगा जाए।
Explanation from the defaulter may be obtained.
7. राशि को 10 समान किस्तों में वसूल किया जाए।
The amount may be recovered in 10 equal instalments.
8. छुट्टी का नकदीकरण रोका जा सकता है।
Leave encashment can be withheld.
9. सभी लंबित अग्रिमों का विवरण प्रस्तुत करें।
Put up the details of all pending advances.
10. निविदा प्रक्रिया शुरू की जाए।
Tender process may be initiated.
11. निविदा सूचना में सभी निबंधन व शर्तों का उल्लेख करें।
Mention all terms and conditions in Tender Notice.
12. मानदंडों का पालन करें।
Adhere the norms.
13. उपर्युक्त क्रय आदेशों से संबंधित मूल बैंक गारंटियों को वापस भेज दें।
Please return the original Bank Guarantees in respect of the above Purchase Orders.
14. मुहरबंद आवेदन ही स्वीकार किए जाएँगे।
Sealed applications only will be accepted.
15. उसका आवेदन स्वीकार किया जाए।
His application may be acceded to.
16. आपका अनुरोध स्वीकार नहीं किया जा सकता।
Your request can not be acceded to.
17. कृपया तकनीकी विनिर्देश भेजें।
Please send the technical specifications.
18. एक महीने के अंदर मामले का निपटान करें।
Dispose the matter within one month.
19. कानूनी कार्यवाही शुरू करें।
Initiate legal proceedings.
20. सभी लंबित अग्रिमों का विवरण प्रस्तुत करें।
Put up the details of all pending advances.
21. आवधिक जाँच की जाए।
Periodical checking may be done.
22. रिपोर्ट प्रधान कार्यालय को अग्रेषित की जाए।
Report may be forwarded to Head Office.
23. माँगी गई सूचनाएँ तत्काल उपलब्ध करवाएँ।
Provide required information immediately.
24. निवारक उपाय किए जाएँ।
Remedial measures may be taken.
25. अपशिष्ट-निपटान की व्यवस्था की जाए।
Waste disposal may be arranged
26. टीकाकरण अभियान प्रारंभ किया जाए।
Vaccination campaign may be commenced.
27. संगरोध छुट्टी दी जा सकती है।
Quarantine leave can be granted.
28. अनुभागों का निरीक्षण किया जाए।
Sections may be inspected.
29. बैठक के लिए तारीख नियत करें।
Fix a date for the meeting
30. आगे की सलाह की प्रतीक्षा करें।
Further advice may be awaited

अंतरिक्ष शब्दावली / SPACE GLOSSARY

Half wave - अर्ध तरंग
Handling - संचालन
Hard - कठोर
Hard error - गंभीर त्रुटि
Hard metal - कठोर धातु
Hard radiation - अतिवेधी विकिरण
Hard water - कठोर जल
Hardometer - कठोरतामापी
Harmonization - सनादीकरण
Heat balance - ऊष्मा संतुलन
Heat capacity- ऊष्मा धारिता
Heat conductor - ऊष्मा चालक
Heat flow - ऊष्मा प्रवाह
Heat pipe - ऊष्मा प्रवाहिका
Heat treatment - ऊष्मा उपचार
Heating - तापन
Height - ऊँचाई, उच्चता
High altitude test - उच्च तुंगता परीक्षण
High frequency - उच्च आवृत्ति
High precision - उच्च परिशुद्धता
High speed - तीव्र चाल
High resolution imagery - उच्च विभेदन प्रतिबिंबकी
Horizon - क्षितिज
Horse power - अश्व शक्ति
Humidity- नमी, आर्द्रता
Hydraulic - द्रवचालिकीय
Hydraulic press - द्रवचालित दाबक
Hydrodynamics - द्रवगतिकी
Hydrosphere - जलमंडल

Hypothesis - परिकल्पना
Igniter - प्रज्वालक
Image - प्रतिबिंब
Imbalance - असंतुलन
Impulse - आवेग
Inductor - प्रेरक
Inertial - जड़त्वीय
Information science - सूचना विज्ञान
Infrared - अवरक्त
Infrasonic - अवश्रव्य
Infrastructure - अवसंरचना
Initial - प्रारंभिक
In-orbit operation - कक्षीय प्रचालन
Insensitive - असंवेदनशील
Instrumentation - यंत्रीकरण
Integration - समाकलन
Intense line - तीव्र रेखा
Intensity - प्रबलता, तीव्रता
Internal force - आंतरिक बल
Internal power - आंतरिक शक्ति
Internal pressure - आंतरिक दाब, आंतरिक दवाब
Invention - आविष्कार
Irradiation - किरणन
Isolator - पृथक्कारी
Isotopic - समस्थानिक
Key board - कुंजी पटल
Kinetic energy - गतिक ऊर्जा
Kinetic theory - गतिक सिद्धांत
Laboratory - प्रयोगशाला

प्रशासनिक शब्दावली / ADMINISTRATIVE GLOSSARY

Criticism – आलोचना

Crucial date – निर्णायक तिथि

Culprit – अपराधी

Cumulative – संचयी

Currency – मुद्रा

Current account – चालू खाता

Curriculum vitae – जीवन-वृत्त

Custodian – अभिरक्षक

Custom – सीमा-शुल्क

Cut off marks – विच्छेदक अंक

Cycle – चक्र

Daily allowance – दैनिक भत्ता

Daily wages – दैनिक मज़दूरी

Dais – मंच

Damage – क्षति, हानि

Data analysis – आँकड़ा विश्लेषण

Date – दिनांक

Dead account – निष्क्रिय खाता

Deadline – समय सीमा

Dealing assistant – संबंधित सहायक

Dearness allowance – महँगाई भत्ता

Dearness relief – महँगाई राहत

Debate – वाद-विवाद

Debit balance – नामे, शेष

Decision – निर्णय, फैसला

Declaration form – घोषणा-पत्र

Dedication – समर्पण

Deduction – कटौती

Default – चूक

Defective – दोषयुक्त, त्रुटिपूर्ण

Deficiency – कमी, न्यूनता

Define – निश्चित करना

Delay – विलंब

Delivery order – सुपुर्दगी आदेश

Demand – माँग

Departmental promotion – विभागीय पदोन्नति

Departure – प्रस्थान

Dependent – आश्रित

Designation – पदनाम

Despatch note – प्रेषण नोट

Detail – ब्यौरा

Detailed Inspection – ब्यौरेवार निरीक्षण, विस्तृत निरीक्षण

Development – विकास

Dictionary – शब्दकोश

Disaster management – विपदा प्रबंधन, आपदा प्रबंधन

Disciplinary action – अनुशासनिक कार्रवाई

Distinguished – विशिष्ट

Division – प्रभाग

Drive – अभियान

Driver – चालक

ग्रीक व लैटिन पदबन्ध/GREEK & LATIN PHRASES

AB INITIO : प्रारंभ से
ADHOC : तदर्थ
AD INFINITUM : निरवधि
AD INTERIM : अन्त: कालीन/ अस्थाई/अल्पकालीन
ADJOURN SINE DIE : अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना
ADVALOREM : यथामूल्य
ANTIDATED : पूर्व दिनांकित
AT PAR : सम मूल्य पर
AUDI ALTERAM PARTEM : दूसरे पक्ष को भी सुनो
BONAFIDE : वास्तविक
BONAFIDES : सदाशयता
CUM : व / एवं
DATA : आँकड़े / तथ्य
DEFACTO : वस्तुत:
DE JURE : विधित:
DELUXE : विशिष्ट/सुखद
DEMURRAGE : विलंब शुल्क
DE NOVO : नए सिरे से
DITTO : यथोपरि
EN ROUTE : रास्ते में
ERATTA : शुद्धि-पत्र
ETCETRA : इत्यादि
EX CADRE : संवर्ग बाह्य
EX GRATIA : अनुग्रहपूर्वक
EX-OFFICIO : पदेन
EX PARTE : एकतरफा/एकपक्षीय
EX POST FACTO : कार्योत्तर / भूतलक्षी प्रभाव
IBIDEM (IBID) : वही
IDEST (IE) : अर्थात्
IN ABSENTA : अनुपस्थिति में
IN CAMERA : बंद कमरे में
INFRA : नीचे
INJURIA SINE DAMNO : बिना हानि के क्षति
IN LIEU OF : के बदले में/के स्थान पर
IN SITU : स्थानस्थ, यथावत
INTER ALIA : अन्य बातों के साथ-साथ
INTER SE : परस्पर
IN TOTO : संपूर्णत:
IN TRANSIT : मार्ग में/मार्गस्थ
INTRA VIRES : अधिकाराधीन
IPSO FACTO : यथातथ्यत:/इसी बात से
IPSO JURE : विधित:
LIAISON : संपर्क
LOCUS STANDI : सुने जाने का अधिकार
MALAFIDE : कदाशय , दुर्भावनापूर्ण
MANIFESTO : घोषणा पत्र
MEMORANDUM : ज्ञापन
MESNE PROFITS : अंत:कालीन लाभ
MODUS OPERANDI : कार्य प्रणाली
MUTATIS MUTANDIS : आवश्यक परिवर्तनों सहित
NOTA BENE (N.B) : विशेष ध्यान दीजिए
ONUS : दायित्व/भार
ONUS OPERANDI : सिद्धि भार
PAR EXCELLENCE : श्रेष्ठ/उत्कृष्ट
PER ANNUM : प्रति वर्ष
PER CAPITA : प्रति व्यक्ति
PERCENT : प्रतिशत
PER DIEM : प्रति दिन
PERMENSEM : प्रति माह
PER SE : स्वत:
PERSONNEL : कार्मिक
PORTFOLIO : संविभाग
POST SCRIPT (P.S) : पुनश्च
PRIMA FACIE : प्रथम दृष्ट्या/ प्रत्यक्षत:
PROFORMA : प्रारूप/प्रोफार्मा/प्रपत्र
PRO RATA : अनुपातत: / आनुपातिक
PROS AND CONS : पक्ष - विपक्ष
PRO TANTO : उस सीमा तक
PROVISO : परंतुक/शर्त
PROXIMO : आगामी मास का
PROXY : प्रतिपत्र / प्रतिपुरुष
QUANTUM : क्वान्टम/ प्रमात्रा
QUASI JUDICIAL : अर्धन्यायिक
QUID PRO QUO : बदले में, प्रतिदान
QUORUM : कोरम / गणपूर्ति
RESUME : सारांश
SINE CURE : दायित्वहीन
SINE DIE : अनिश्चित काल के लिए
SINE QUA NON : अपरिहार्य शर्त/ अनिवार्य शर्त
STATUS QUO : यथापूर्व स्थिति
SUB-JUDICE : न्यायाधीन
SUO MOTU : स्वप्रेरणा से/अपने आप से
TENURE : अवधि / कार्यकाल
ULTIMO : गत मास का
ULTRAVIRES : शक्ति बाह्य / अधिकार के परे
VERBATIM : शब्दश:
VERSUS : विरुद्ध
VETO : निषेधाधिकार
VIA : होकर
VICE : के स्थान पर
VICE VERSA : प्रतिलोमत:
VIDELICET (VIZ) (NAMELY) : अर्थात्
VIRTUE OFFICIO : पदेन
VIS-A-VIS : आमने-सामने / की तुलना में
VIVA VOCE : मौखिक परीक्षा
WAD : नोटों की गड्डी
WRIT : रिट, परमादेश

राजभाषा प्रश्नोत्तरी

आर महेश्वरी अम्मा
सहायक निदेशक (रा.भा.)

1 किस वर्ष पहली केंद्रीय हिंदी समिति का गठन किया गया था ?

2 केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं ?

3 वर्तमान केंद्रीय हिंदी समिति में कितने राज्यों के मुख्य मंत्री सदस्य हैं ?

4 केंद्रीय हिंदी समिति के पदेन सदस्य कौन-कौन हैं ?

5 राजभाषा अधिनियम-1963 की किस धारा के तहत 1976 में संसदीय राजभाषा समिति गठित की गई ?

6 संसदीय राजभाषा समिति के वर्तमान अध्यक्ष कौन हैं ?

7 संसदीय राजभाषा समिति के वर्तमान उपाध्यक्ष कौन हैं ?

8 संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के कितने सदस्य होते हैं ?

9 अंतरिक्ष विभाग के केंद्रों का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की किस उप-समिति द्वारा किया जाता है ?

10 संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी उप-समिति नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से विचार-विमर्श करती है ?

11 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन करने हेतु नगर में केंद्रीय सरकार के कम-से-कम कितने कार्यालय होने चाहिए ?

12 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक वर्ष में कितनी बार आयोजित की जानी चाहिए ?

13 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं ?

14 केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन हैं?

15 अंतरिक्ष विभाग और परमाणु ऊर्जा विभाग की संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति के अध्यक्ष कौन हैं ?

उत्तर

1 1967
2 प्रधान मंत्री
3 6
4 संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष और इसकी तीनों उप-समितियों के संयोजक
5 धारा 4
6 श्री अमित शाह
7 श्री भर्तृहरि महताब
8 20
9 दूसरी उप समिति
10 आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति
11 10
12 2
13 नगर के वरिष्ठतम अधिकारी
14 राजभाषा विभाग के सचिव
15 प्रधान मंत्री

मेरी प्रिय पुत्री

सोनी मोहन
वैज्ञा/इंजी-एसई, आरक्यूए

सूर्यास्त का समय था। अनिता अपने घर के बरामदे में बैठी थी। हर दिन शाम को चाय के साथ वह यहाँ बैठती थी और अपने भूतकाल की यादों में व्यस्त रहती थी। आज की शाम अधिक लाल थी, जैसे उसके हृदय में दु:ख का भार। उसके सफेद बालों को हल्के से स्पर्श करती हुई ठंडी हवा चल रही थी, मानो उसे दिलासा दे रही हो। पर वास्तव में हवा उसके मन की आग को बढ़ा रही थी।

अनिता का मन चालीस साल पहले की यादों में विचरण कर रहा था। अनिता डिग्री की पढ़ाई के बाद नौकरी की तलाश में थी। अनिता दिखने में काफी खूबसूरत थी। उसके लिए शादी के रिश्ते आने लगे। अनिता पहले नौकरी पाना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि नौकरी मिलने के बाद शादी करेगी। इसी बीच उसके लिए एक इंजीनियर का रिश्ता आया। लड़की देखने वह इंजीनियर और उसका परिवार आए। लड़के का नाम रघुनाथ था। वह पीडब्ल्यूडी का इंजीनियर था। दिखने में वह उतना सुन्दर नहीं था। पर व्यवहार में काफी अच्छा था। इस कारण अनिता और घरवालों को लड़का पसंद आया। यही नहीं, लड़के के घरवालों ने दहेज नहीं माँगा। लड़का पढ़ा-लिखा था और उसकी अच्छी नौकरी भी थी। इन सब कारणों से अनिता के घरवालों ने उसकी शादी रघुनाथ से निश्चित कर दी।

बड़े धूमधाम से शादी हुई। अनिता और रघुनाथ ने बंधुजनों एवं गुरुजनों के आशीर्वाद के साथ वैवाहिक जीवन शुरू कि। सभी जोड़ियों की तरह उन दोनों के बीच भी संगतियाँ और विसंगतियां थीं। रघुनाथ गंभीर स्वभाव का था और अनिता हँसमुख थी। रोज़ रघु काम पर जाता था। उस समय अनिता घर बैठकर ऊब जाती थी। इसी दौरान अनिता ने अखबार में फैशन डिज़ाइनिंग कोर्स का विज्ञापन देखा। उसको बचपन से इसमें पढ़ाई करने की इच्छा थी। रघु ने भी इसमें भर्त्ती होने की प्रेरणा दी।

अनिता फैशन डिज़ाइनिंग की पढ़ाई करने लगी। यह छह महीने का कोर्स था। एक महीने बाद एक दिन अनिता पढ़ाई के दौरान बेहोश हो गई। रघुनाथ काम छोड़कर अस्पताल पहुँचा। डॉक्टर ने दोनों को अपने कमरे में बुलाया। “तो मिस्टर एंड मिसेस रघुनाथ, बधाइयाँ!” डॉक्टर मुस्कुराते हुए बोले। अनिता और रघु को कुछ समझ में नहीं आया। दोनों एक दूसरे को देखने लगे। डॉक्टर फिर मुस्कुराते हुए बोले, “आप लोगों के बीच एक नन्ही जान आनेवाला है। आप

माता-पिता बनने की तैयारी शुरू कर सकते हैं।" रघु और अनिता यह सुनकर काफी खुश हुए। दोनों मन में संतोष और नई आशा लेकर अस्पताल से घर पहुँचे।

अनिता को अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए पाँच महीने और बाकी थे। रघु अनिता को इस स्थिति में बाहर भेजना नहीं चाहता था। किंतु अनिता पढ़ाई पूरी करने के लिए अटल थी। वह अपनी पढ़ाई और गर्भावस्था एक साथ आगे बढ़ाने लगी। जैसे कहावत है "जहाँ चाह वहाँ राह।" अनिता ने सातवें महीने में फैशन डिज़ाइनिंग का कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया और दो महीने के बाद उसने एक प्यारी लड़की को जन्म दिया। बेटी अनिता की तरह खूबसूरत थी। रघु और अनिता ने उसका नाम 'मोती' रखा।

मोती के एक साल की होने के बाद अनिता फैशन डिज़ाइनिंग का काम पुन: करने लगी। उसको इस क्षेत्र में काफी जानकारी और प्रतिभा थी। इस कारण उसे और ज्यादा काम मिलने लगा। कुछ ही सालों में अनिता शहर की प्रसिद्ध एवं सफल डिज़ाइनर बन गई। करियर के साथ मोती भी बढ़ती गई। उसकी परवरिश में अनिता और रघु के माता-पिता ने भी साथ दिया। मोती पढ़ाई में ही अच्छी नहीं, बल्कि वह स्कूल लीडर भी थी। बारहवीं कक्षा की पढ़ाई के बाद मोती इंजीनियरिंग पढ़ाई के लिए भर्ती हुई।

रघु और अनिता अपनी प्रिय पुत्री मोती को पढ़ाई के लिए तमिलनाडु भेजने से हिचक रहे थे। पर अपनी बेटी के भविष्य के बारे में सोचते हुए दोनों ने कंप्यूटर इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए उसे तमिलनाडु भेजा। दोनों ने चार साल बिना बेटी के गुज़ारे। छुट्टियों में मोती घर आती थी और उनका घर खुशियों से भर देती थी। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद मोती को एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी मिल गई। यह कंपनी दुबई में थी। रघु और अनिता उसे इतने दूर भेजना बिलकुल नहीं चाहते थे। पर मोती अपने माँ की जैसी ज़िद्दी थी। अनिता और रघु ने अपने दिल में पत्थर रखकर अपनी इकलौती बेटी को इतनी दूर भेजा।

दुबई में मोती का परिचय जयशंकर से हुआ। वे दोनों एक ही कंपनी में काम करते थे। मोती ने अपने माता-पिता से जयशंकर से शादी करने का आग्रह प्रकट किया। अनिता और रघु को जयशंकर पसंद आया। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह धूमधाम से किया। शादी के बाद मोती और जयशंकर दुबई वापस चले गए।

शादी के पाँच महीने बाद अनिता और रघु अपनी बेटी को देखने दुबई जाने वाले थे। उसी समय दुनिया-भर में कोविड-19 महामारी फैल रही थी। भारत और दुबई के बीच विमान यात्रा पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। विमान यात्रा फिर शुरू होने की प्रतीक्षा में थे मोती और उसके माता-पिता। अनिता हर रोज़ मोती से टेलीफोन पर बात करती थी। एक दिन अनिता को मोती काफी थकी-सी लगी। अगले दिन जब उसने बुलाया तो मोती ने कहा कि जयशंकर की तबीयत ठीक नहीं है और वह काम पर नहीं जा रहा है। तीन दिन के बाद भी जयशंकर का बुखार नहीं उतरा। डॉक्टर ने उससे कोविड-19 की जाँच करने की सलाह दी। जयशंकर कोविड पोजिटिव निकला। मोती ने जयशंकर का खूब ख्याल रखा। एक हफ्ते के बाद मोती को भी कोविड-19 के लक्षण शुरू हुए। पर वह जयशंकर को अकेले छोड़कर अस्पताल जाना नहीं चाहती थी।

मोती की तबीयत बिगड़ती गई। उसे साँस लेना भी मुश्किल हो गया। मोती को तुरंत अस्पताल भर्ती करना पड़ा। मोती को आई.सी.यू भेजा गया। यह खबर सुनकर अनिता और रघु अत्यंत दु:खी हुए। अनिता सारे मंदिरों में मोती के लिए प्रार्थना करने लगी। पर मोती का स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बिगड़ने लगा। डॉक्टरों ने मोती को बचाने के लिए उसे वेंटिलेटर पर रखने का निर्देश दिया। मोती वेंटिलेटर से डरती थी। उसका भय था कि वेंटिलेटर से वह वापस ज़िन्दा नहीं आ पाएगी। किंतु जयशंकर ने उसको बचाने के लिए डॉक्टरों की सलाह मानी। मोती का डर सच हो गया। वेंटिलेटर पर रखे जाने के दो घंटे बाद दिल का दौरा पड़ने से उसकी मृत्यु हो गई।

यह दु:खद घटना रघु और अनिता की सहन सीमा के बाहर थी। अनिता अपनी सुध-बुध खो बैठी। वह पागलों की तरह चीखने-चिल्लाने लगी। कोई भी उसे दिलासा नहीं दे पाया। उसकी बेटी उसकी जान थी। 23 साल की अल्पायु में उसे खोना अनिता और रघु की सहन-शक्ति से परे था। यही नहीं, कोविड के कारण मृत्यु होने के कारण वे अपने पुत्री का पार्थिव शरीर भारत नहीं ला सकते थे। किंतु अनिता अपनी बेटी को अंतिम बार दूर से ही सही, एक बार देखना चाहती थी। इसी लक्ष्य से वे दोनों दुबई पहुँचे और इस दुनिया से अपनी लाड़ली बेटी की विदाई की।

अनिता काँपती हुई अपने खयालों से बाहर आई। वह चाहती थी कि ये सब सिर्फ बुरे सपने थे। परंतु यह वास्तविकता है। कोविड-19 महामारी ने उसके बुढ़ापे का सहारा, इकलौती बेटी को उससे छीन लिया। दुनिया-भर में न जाने ऐसे कितने माता-पिता नि:संतान बन गए। न जाने कितने बच्चे अनाथ हो गए हैं। अनिता की आँखों से आँसू बहने लगे जैसे उसके हृदय के घाव से खून बह रहा हो।

* * * * * *

कोविड-19 और प्रवासी श्रमिकों का पलायन

प्रियदर्शन
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, पीएसएमडी

प्रस्तावना

प्रस्तुत तस्वीर हमारा ध्यान आज के दौर के अत्यंत संगीन मुद्दे की ओर आकर्षित करती है। बरबस ही हमारी आँखों के सामने कोविड-19 के कारण किए गए अकस्मात् देशव्यापी लॉकडाउन या तालाबंदी और फिर प्रवासी श्रमिकों की घर वापसी का मंजर पुन: आ जाता है। एक ऐसा दौर जब रोज़गार की अनिश्चितता, भोजन-राशन की कमी एवं कुछ हद तक महामारी के डर के कारण प्रवासी श्रमिक यथाशीघ्र अपने-अपने पैतृक स्थानों की ओर लौटने लगे ताकि इस बुरे दौर में कम-से-कम अपने अपनों के बीच तो रह सकें। लॉकडाउन के कारण यातायात के साधन न होने के कारण हज़ारों श्रमिक अपना बचा-खुचा सामान लेकर अपने परिवारों के साथ सैकड़ों-हज़ारों मील की पैदल यात्रा पर निकलने को भी विवश हो गए। इनमें से सैकड़ों के लिए तो यह उनकी अंतिम यात्रा साबित हुई।

अप्रैल-मई 2021 में कोविड-19 महामारी के दूसरे दौर के उभरने के समय भी कमोबेश यही स्थिति यथावत रही और शहरों में बचे-खुचे श्रमिकों में से अधिकांश ने पुन: ऐसी यात्राएँ कीं। वस्तुत:, जीवन एवं जीविका की आशंकाएँ अब प्रवासी श्रमिकों के अस्तित्व का एक अभिन्न अंग बन चुकी हैं तथा यह वर्ग इस समस्या से, विशेषकर कोविड-19 महामारी के इस दौर में, जूझ रहा है और अपना अस्तित्व बचाने में लगा हुआ है।

प्रवासी श्रमिकों की उत्पत्ति के कारण

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने शनैः शनैः सभी क्षेत्रों में अनवरत आर्थिक प्रगति की है, चाहे वह कृषि हो या उद्योग, बुनियादी ढाँचा निर्माण या अंतरिक्ष अभियान, यातायात के साधन हों या दूरसंचार, हमारी प्रगति पूरी दुनिया देख रही है। परंतु, जो बात यह दुनिया या तो देख नहीं पा रही है या देख सुनकर भी अनदेखा-अनसुना कर दे रही है, वह है इस प्रगति में श्रमिकों का योगदान। श्रमिक वर्ग ने ही अपने खून-पसीनों से इस निरंतर विकास की आधारशिला रखी है। इनमें से एक बड़ा हिस्सा वह है जो अपना घर-बाड़ छोड़कर दूसरे गाँव, दूसरे शहर, दूसरे जिले या दूसरे प्रांत में जाकर अपना श्रमदान दे रहा है तथा आजीविका कमाकर अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण कर पा रहा है। परंतु, इन अत्याधुनिक सुविधाओं तथा प्रगति के कर्त्ता-धर्त्ता प्रायः रोटी, कपड़ा और मकान की जद्दोजहद में ही सारा जीवन बिता देते हैं।

आइए आकलन करें कि ये श्रमिक कैसे बने एवं इनकी तादाद क्या है। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। परन्तु, एक बड़ा तबका भूमिहीन है। निरंतर बढ़ती आबादी तथा आपसी बँटवारे के कारण भूमि की कमी होती जा रही है। भारत के आर्थिक सर्वे, 2017 के अनुसार ग्रामीण घरों में 56.41% घर भूमिहीन हैं अर्थात् लगभग 10 करोड़ परिवार भूमिहीन हैं। गाँवों में कृषि कार्यों में आमदनी सीमित है, इसलिए ये भूमिहीन रोज़गार की तलाश में पलायन करते हैं। छोटे भू-स्वामी भी बेहतर आय के लिए कृषि कार्य छोड़ शहरों में श्रम के लिए पलायन करते हैं। इसी आर्थिक सर्वे के अनुसार वर्ष 2011 में अंतर-राज्य प्रवासी श्रमिकों की संख्या लगभग 8 करोड़ एवं अंतर-जिला प्रवासी श्रमिकों की संख्या लगभग 6 करोड़ है। लगभग 14 करोड़ की यह कुल संख्या आज के दौर में लगभग 20 करोड़ पार कर चुकी होगी, ऐसा अनुमान है। विडंबना यह है कि सरकार इस पलायन को आर्थिक विकास का द्योतक मानती है। आंशिक रूप से यह सही है, परन्तु दूसरा पक्ष, अर्थात् इन प्रवासी श्रमिकों की समस्याएँ प्रायः अनदेखी रह जाती हैं।

कोविड-19 महामारी जनित समस्याएँ

कोविड-19 महामारी का पहला दौर मार्च, 2020 में विकराल स्वरूप लेने लगा। इससे निपटने की चाहत में केंद्र सरकार ने 24 मार्च, 2020 को देशव्यापी संपूर्ण लॉकडाउन की घोषणा की। यह लॉकडाउन पहले 14

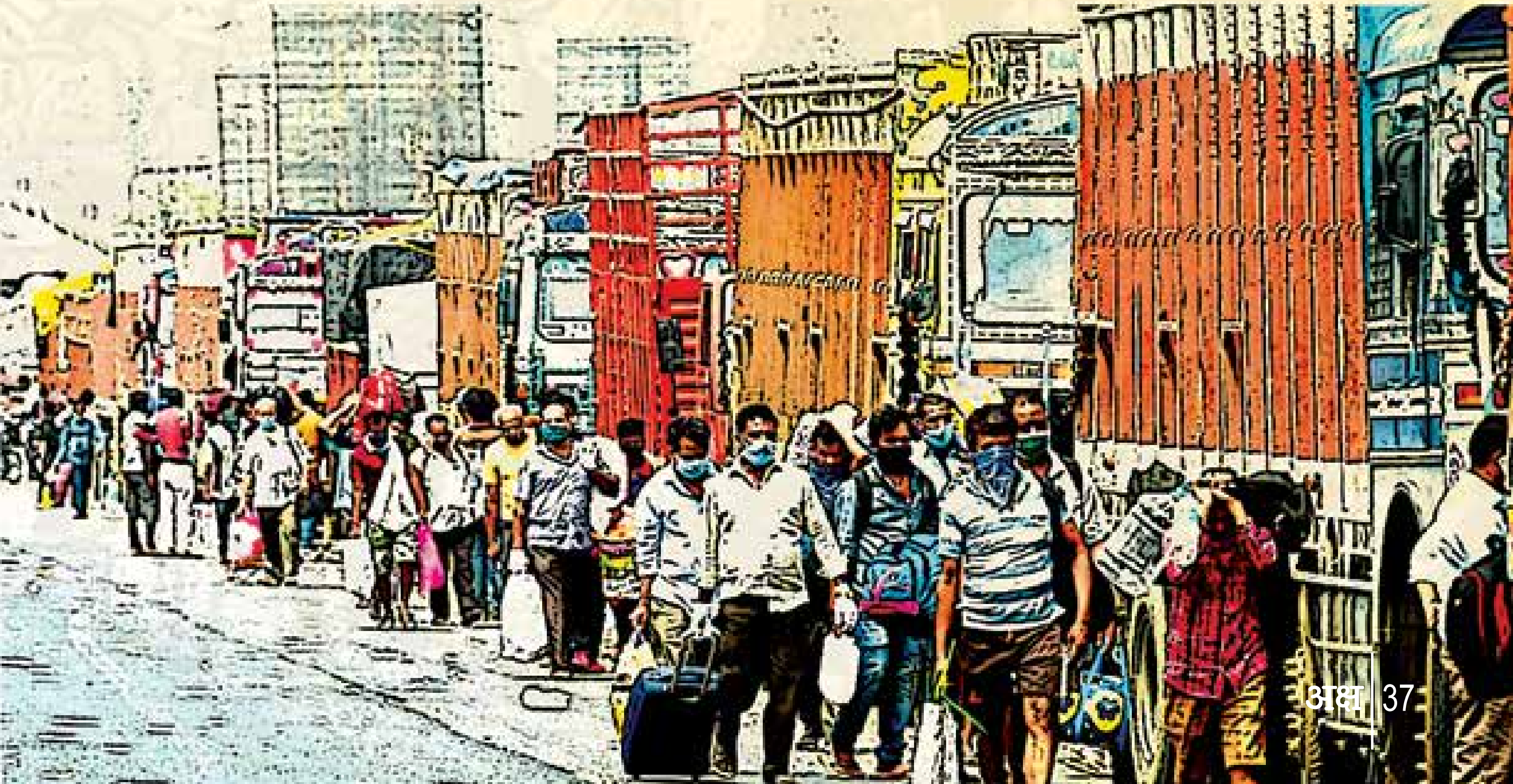

अप्रैल, 2020 तक एवं फिर 3 मई, 2021 तक बढ़ा दिया गया। इसके बाद विभिन्न राज्यों में विभिन्न समयों पर पूर्ण अथवा आंशिक लॉकडाउन होते ही रहे। अप्रैल-मई, 2021 में कोविड-19 के दूसरे दौर ने विकराल रूप ले लिया और पुन: लॉकडाउन का दौर बलवती हो गया।

जैसा कि पहले बताया गया, लॉकडाउन के कारण प्रवासी श्रमिक कठिन यात्राएँ कर अपने-अपने मूल स्थानों पर लौटने को मज़बूर हो गए। एक सर्वे के अनुसार, प्रवासी श्रमिकों के मूल स्थान की ओर पलायन के कारणों में सबसे अधिक 47.5% रोज़गार ख़्तम होना माना गया। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बंद होने के कारण फैक्ट्री मालिकों ने भी कइयों को काम से रातोंरात निकाल दिया जो कि पलायन का दूसरा सबसे बड़ा कारण बना। भोजन एवं राशन की कमी तीसरा सबसे बड़ा कारण था। अन्य कारणों में मकान मालिकों द्वारा जबरन निकासी, अपने परिवार जनों की चिंता तथा उनसे मिलने की लालसा और कुछ हद तक महामारी से ग्रसित होने का भय भी पलायन के कारण बने।

पलायन के कारणों तथा निदान की विवेचना

हालाँकि केंद्र तथा राज्य सरकारों के द्वारा कुछ राहत योजनाएँ चलाई गईं। परंतु, ये अनुदान मुफ्त राशन, कुछ लघु नकद अनुदान इत्यादि के रूप में थीं। परंतु, मूल समस्या थी रोज़गार की कमी या रोज़गार के अवसर छिन जाने की, जिसका समुचित समाधान नहीं निकल सका तथा इस मामले में भगवान भरोसे या फिर मालिकों की सहृदयता के भरोसे ही छोड़ दिया गया। इसी कारण यह बड़ा वर्ग अपने अस्तित्व को बचाने के दौर से गुज़र रहा है।

ऐसे में सबसे बड़ी ज़रूरत है कि श्रमिकों को कानूनी तौर पर, विशेषकर ऐसे आपात समय में, कुछ संरक्षण मिल सके तथा उनके रोज़गार के खोने की स्थिति में कुछ आर्थिक समाधान दिया जा सके। ऐसा नहीं है कि कानून बनाए नहीं गए। 1979 में अंतर-राज्यीय प्रवासी श्रमिक (रोज़गार नियंत्रण वं सेना शर्तें) अधिनियम पारित हुआ। बाद में भी कई बार श्रम सुधारों के तहत नए कानून बनाए गए। परंतु, ऐसे आपात काल में ये कानून धरे-के-धरे रह जाते हैं। इस लॉक़डाउन के दौरान भी प्रधानमंत्री तथा सरकारें अपील ही करती रहीं कि उन्हें रोज़गार से न निकाला जाए, परंतु किन्हीं ठोस कानूनी उपायों की कमी साफ महसूस की गई। ऐसे दैर में सरकारों द्वारा ज़रूरी संरक्षण प्रदान करने की असमर्थता सबसे बड़े रूप में उभर कर सामने आई है। एक ऐसे दौर में, जब उदाहरणस्वरूप अप्रैल, 2020 में लगभग 11.4 करोड़ रोज़गार छिन गए एवं अप्रैल-मई, 2021 में 2.5 करोड़ रोज़गार छिन गए, सरकारों की यह नाकामी एवं असमर्थता भारत के दीर्घकालिक आर्थिक-सामाजिक विकास को बुरी तरह प्रभावित करेगी, इसमें कोई शक नहीं।

उपसंहार

प्रवासी श्रमिकों के पलायन की समस्या व्यवसाय-उद्योग-व्यापार एवं मानवाधिकार समूहों को शासन-प्रशासन की कमी दर्शाने के लिए कई सबक सिखाती है। साथ-ही-साथ नीति-निर्माताओं का ध्यान इस ओर बड़ी तेज़ी से आकर्षित करने का प्रयास करती है। अगर हम समय रहते इस समस्या के सुचारू समाधान के उपाय तलाश नहीं कर पाए, तो अच्छी आर्थिक-सामाजिक प्रगति तो दूर, हमारे लिए याथास्थिति भी बनाए रखना मुश्किल होगा तथा यह सामाजिक एवं आर्थिक अराजकता की और अग्रसर होने का कारक साबित होगा। श्रमिक हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी हैं, हमें हर हाल में उनको खुशहाली के रास्ते पर लाना होगा। अन्यथा, हमारी एवं हमारे देश की खुशहाली पर प्रश्न-चिह्न लग जाएगा।

* * * * * *

भारत की आज़ादी का 75वाँ पर्व, अमृत महोत्सव

गौरीशशिकुमार
श्री शशिकुमार की सुपुत्री
उप निदेशक, एसआईएस

18वीं सदी में अँग्रेज़ व्यापारी अच्छे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए भारत तट पर आ पहुँचे। अपने आगमन के कुछ ही सालों में अनेक युद्धों के ज़रिए उन्होंने ज़बरदस्ती भारत में राजनैतिक और सैनिक प्रभुत्व प्राप्त किया, जो अंग्रेज़ राज कहा गया। अंग्रेज़ों के दोषपूर्ण नियमों से गरीबी, असहमति एवं धार्मिक संकटों की ओर धकेली गई भारतीय जनता ने उनके विरुद्ध स्वराज के लिए एक अहिंसात्मक जंग को प्रारंभ किया जिसके फलस्वरूप 15 अगस्त, 1947 को भारत ने ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता हासिल की।

अगर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को सिर्फ 4 वाक्यों में संक्षिप्त किया जा सकता, उसे देशभक्ति से संपूर्ण ऐसा महाकाव्योचित विजयगाथा कहा जाता, जिसके नाम से ही हर भारतीय में देशभक्ति और गर्व के मनोभाव से भर जाते हैं। भारत की स्वतंत्रता केवल अँग्रेज़राज का अंत या प्रजातंत्र का प्रारंभ ही नहीं बल्कि अनेक संस्कृतियों और रिवाज़ों को देशभक्ति के रेशमी धागों से साथ बाँधने की शुरुआत भी थी। एक ऐसी शुरुआत, जिसमें जनता के प्रगतिशील विकास, शिक्षा, समानता, कानून और न्याय व्यवस्था को प्राथमिकता दी गई ताकि हर नागरिक अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण रूप से निभा सके।

देश की स्वतंत्रता भारतीय इतिहास के सुवर्ण पन्नों में बहुत महत्वपूर्ण है और भारत का 75 वाँ स्वतंत्रता दिवस बेशक पवित्र अवसर है। इसी 75वीं वर्षगांठ के 75 सप्ताह पूर्व 12 मार्च, 2021 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आज़ादी का अमृत महोत्सव और उसके संबंध में कई कार्यक्रमों के आयोजन का आह्वान किया। इस तारीख की एक और विशेषता है – 12 मार्च, 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने दांडी मार्च एवं नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। 2021 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री ने साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरुआत में 75 किलोमीटर की पदयात्रा का भी आह्वान किया।

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' का प्रधान उद्देश्य आज़ादी के 100 साल बाद, 2047 के भारत का विकास और उत्थान है। इसका संदेश स्पष्ट है– भविष्य पर निगाह रखते हुए देश की आज़ादी के संघर्ष के सुवर्ण इतिहास का भी स्मरण करना चाहिए। अपने

संबोधन के दौरान भारत के आगे बढ़ने की प्रेरणा के बारे में बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, "आइडियाज़ @ 75, अचीवमेंट्स @ 75, एक्शन @ 75, और रिज़ॉल्व @ 75। ये पाँचों स्तंभ आज़ादी की लड़ाई के साथ-साथ आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।"

इस महोत्सव द्वारा नई पीढ़ी को 75 वर्षों में हुए विकास और प्रगतिशील बदलावों को और भी बेहतर बनाने का सुवर्णावसर प्राप्त करना है और साथ ही भारत के उन अकीर्तित स्वतंत्रता सेनानियों के अमूल्य बलिदानों के बारे में भी ज्ञान प्रदान करना है, जो हमारे इतिहास के किताबों में नहीं पाए जाते। यही उनमें भारतीय होने का गर्व जताता है और न्यायमूलक समाज की रचना की प्रेरणा देता है, ताकि उनके जोश और जज़्बे को देश की उन्नति में सही ढंग में प्रयोग किया जा सके।

भले ही आज़ादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त, 2023 को समाप्त होता हो, यह अत्यावशयक है कि हम अपने अंदर के देशभक्ति, उत्साह और उमंग के दिए को कभी बुझने ना दें और सदा उसका प्रयोग देश के विकास के लिए करने का उत्तरदायित्व हमेशा पूर्णता से निभाएँ।

* * * * * *

आपके जीवन में सफलता का मापदंड क्या है?

दीपू कुमार

वैज्ञा/इंजी-एसई, सीसीडीडी

सफलता एक ऐसा शब्द है जिससे सभी परिचित हैं, पर सफलता क्या है? यह सभी के लिए अलग-अलग हो सकती है, जैसे पैसा कमाना, शोहरत पाने, पर सफलता के पीछे जो एहसास है, वह सबके लिए समान है, वह है खुशी मिलना। अब समझने वाली बात यह है कि सफलता से खुशी तो मिलती है पर केवल खुशी मिलना सफलता नहीं है। आप इसे इस प्रकार से समझ सकते हैं। बचपन में आप ज्यादा खुश रहते होंगे पर आज अपने आप को ज्यादा सफल समझते होंगे।

तो अब सवाल यह है कि सफलता क्या है ? मैं यहाँ अपने विचारों को रखना चाहूँगा। मेरे हिसाब से सफलता एक काबिलियत (हुनर) है जिसके होने से आप अपने समाज में, परिवार में और लोगों के जीवन

में खुशी ला सकें, उनके जीवन को सुखमय बना सकें, उनकी कठिनाइयों को दूर कर सकें। ऐसा करने से आप अपने जीवन को सफल समझ सकते हैं। इसीलिए डॉक्टर, इंजीनियर, समाजिक कार्यकर्ता इत्यादि लोग एक सफल इंसान हैं। अब सवाल यह है कि सफलता कैसे मिलेगी। आप औरों के जीवन में खुशियाँ तभी ला सकते हैं जब आप उतने काबिल हों। मेरे ख्याल से काबिल बनने के लिए अच्छी शिक्षा और अच्छे संस्कार (गुण) ज़रूरी है। इसी लिए तो बड़े बुर्जुर्ग कह गए हैं कि शिक्षा और संस्कार सफलता पाने की कुंजी है।

सफलता सभी में अलग-अलग होती है। अब यहाँ सफलता के अलावा असफलता की भी व्याख्या ज़रूरी है। सभी के मन में यह लगता है कि किसी कार्य को न कर पाना असफलता है। जो लोग असफल होने के बाद रुक जाते हैं वे लोग थोड़ा कम सफल होते हैं। और जो लोग असफल होने के बाद भी उस कार्य को करते हैं वे ज्यादा सफल होते हैं। मेरे ख्याल से सफलता के पीछे बहुत सारी असफलता एवं कठिनाइयाँ होती हैं, जिसे पार करके लोग सफल बन पाते हैं। मेरा मानना है कि असफलता भी आपको सफलता दिलाने के लिए आती है। यह आपको नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि आपके अंदर की शक्ति को जगाने के लिए आती है। असफलता आपको अंदर से मज़बूत बनाती है, आपके अंदर से कठिनाइयों के प्रति भय को मिटाती है, ढेर सारी शिक्षा देती है और आपको काबिल बनाती है कि आप उस कार्य में सफल हो सकें। इस कारण जब कोई पहली बार गिर के उठता है तो ज्यादा आत्मविश्वास के साथ चलता है, दौड़ता है, क्योंकि उसके अंदर गिरने का भय खत्म हो जाता है। दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं होगा जो बिना गिरे चलने में सफल हुआ होगा।

अब सवाल यह है कि सफलता कैसे मिलती है? मेरा मानना है कि सफलता एक दौड़ नहीं है कि दौड़ लगाये और तुरंत मेडल जीत गए। सफलता एक वृक्ष की तरह है, जो पहले एक पौधा था। जो धीरे-धीरे बड़ा हुआ, उसने ठंड से, बरसात से, गर्मी से जंग लड़ी और उसपे जीत पाई। हर मुसीबत को संयम के साथ लड़ा। उसमें भरपूर इच्छाशक्ति थी वृक्ष बनने की उसने हर मुसीबत को अपने आत्मविश्वास और अपनी पूरी क्षमता से लड़ा और सालों की तपस्या के बाद एक वृक्ष बना। वो वृक्ष अपने लिए नहीं बना बल्कि उसने औरों को छाँव दी, मीठे फल दिये, हवा को शुद्ध किया, पक्षियों को रहने के लिए घर दिया। इस प्रकार से उसका जीवन सफल हुआ।

अब सवाल है कि क्या हम सफल हैं? मेरा मानना है कि सफलता एक उन्नत सीढ़ी के समान है। हम जितना ऊपर उठेंगे, सफलता का आयाम बड़ा होता जाएगा। एक बच्चे के लिए अपने पैरों पर बिना किसी के सहारे चलना सफलता है। जब वह बच्चा विद्यार्थी बनकर परीक्षा में सफल होता है वो भी सफलता है। वह बड़ा होकर पिता बनता है अपने परिवार के लोगों का जीवन सुखमय बनाता है यह भी सफलता है। जब वह बच्चा बड़ा होकर डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि किसी भी रूप में समाज की सेवा करता है, उनके जीवन में खुशियाँ लाता है, वह भी सफलता है। जीवन जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, सफलता के नए-नए दरवाज़े खुलते जाते हैं।

* * * * * *

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

रिंपी कुमारी
श्री प्रेम प्रकाश की पत्नी
वरि.तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए

कान दीजिए

बात उन दिनों की है जब मैं अपने गाँव में रहा करती थी। मेरे गाँव के निकट एक स्थान पर प्रत्येक दिन सायंकालीन बाज़ार (हाट) लगता है, जिसका नाम है-वैशाली हाट। एक दिन की बात है मैं अपनी दो सहेलियों के साथ वैशाली हाट घूमने गई। हाट पर घूमते हुए हमलोग एक जगह पर पहुँचे, जहाँ पर काफी भीड़ जुटी हुई थी। मैंने सोचा, ''देखा जाए, आखिर मामला क्या है, इतने लोग इकट्ठे क्यूँ हैं, लोग आपस में क्या बातें कर रहे हैं'? मुझे बहुत उत्सुकता हो रही थी। एक को टोक कर पूछ ही लिया, परंतु कुछ समझ नहीं आया। बड़े प्रयत्न के बाद मैंने भीड़ के अंदर प्रवेश कर लिया फिर नज़ारे दिखाई और सुनाई पड़ने लगे।

मैंने देखा, 'एक कुम्हार है- जिसने चारों तरफ बेचने के लिए कुछ मूर्त्तियाँ लगा रखी है।' एक मटमैले बोर्ड पर लिखा हुआ था, भोलू कुम्हार-मूर्त्तिकार। मूर्त्तियाँ देखने में बहुत सुंदर थी। हम सबने सोचा क्यूँ न एक-एक मूर्त्ति खरीद लिया जाए। भोलू के पास तीन तरह की मूर्त्तियाँ थी और उन मूर्त्तियों के गले में कीमत कार्ड लटक रही थी। पहली मूर्त्ति की कीमत थी 50 रुपए, दूसरी मूर्त्ति की कीमत 500 रुपए और तीसरी मूर्त्ति की कीमत 5000 रुपए थी। आश्चर्य की बात यह थी कि तीनों मूर्त्तियाँ आकार, वजन, रंग और बनावट में बिल्कुल एक सामान थी। किसी भी दृष्टिकोण से कोई भिन्नता नहीं नज़र आ रही थी फिर इनकी कीमतों में इतना ज़्यादा अंतर कैसे ? मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था कि कौन-सी मूर्त्ति को खरीदा जाए। तभी मैंने भोलू कुम्हार से पूछ लिया, 'भाई साहब, तीनों मूर्त्तियाँ तो एक जैसी ही हैं फिर कीमतों में इतना अंतर क्यूँ है ?'

भोलू कुम्हार ने बिना कुछ कहे एक छड़ निकाल लिया और पहली मूर्त्ति के एक कान में उस छड़ को डालने लगा और हमने देखा कि दूसरी कान से छड़ बाहर निकल गई। फिर उसने वही छड़ दूसरी मूर्त्ति के एक कान में प्रवेश कराया और इस बार छड़ मूर्त्ति के मुँह से बाहर निकल गई। यह

देखकर मेरे साथ-साथ सभी हैरान हो रहे थे। तभी भोलू उस छड़ को तीसरी मूर्त्ति के एक कान में डालने लगा। हम लोग यह देखने को आतुर हो रहे थे कि इस बार छड़ कहाँ से निकलती है? यह क्या! छड़ तो बाहर निकली ही नहीं और मूर्त्ति के अंदर ही गायब हो गई। हम लोगों की आँखें फटी की फटी रह गईं। तभी भोलू बोल पड़ा – "देख लिया अंतर?" मूर्त्तियों के दाम और काम में अंतर था।

लोगों की भीड़ चौगुनी हो चुकी थी। सभी के मन में एक ही सवाल घूम रहा था-आखिर ऐसा कैसे हुआ ? तब भोलू कुम्हार ने बतलाया, 'मैं मूर्त्तिकार के साथ-साथ एक शिक्षक भी हूँ और ये तीन मूर्त्तियाँ विद्यार्थियों के रूप हैं।' जो विद्यार्थी अपने शिक्षक की बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देते हैं उनकी कीमत मात्र 50 रुपए रह जाती है अर्थात् वे अपने भविष्य में प्रत्येक दिन मात्र 50 रुपए तक की आय अर्जित कर पाते हैं। जो विद्यार्थी अपने शिक्षक की बात कानों से सुनकर मुँह से निकाल देते हैं यानि कम ध्यान देते हैं और अत्यधिक बोलते हैं उनकी कीमत 500 रुपए रह जाती है अर्थात् वे अपने भविष्य में प्रत्येक दिन मात्र 500 रुपए तक की आय अर्जित कर पाते हैं। परंतु जो विद्यार्थी अपने शिक्षक की बात को सुनकर न कान से न ही मुँह से निकालते हैं बल्कि उसपर अमल करते हैं, अपने जीवन में उसका प्रयोग करते हैं उनकी कीमत 5000 रुपए हो जाती है अर्थात् वे अपने भविष्य में प्रत्येक दिन 5000 रुपए तक की आय अर्जित करने योग्य बन जाते हैं।

भोलू मूर्त्तिकार ने तीन मूर्त्तियों के ज़रिए गहरी बात समझा दी थी। भोलू मूर्त्तिकार एक ज्ञानी थे जिनकी बातें सुनकर मेरे साथ-साथ सभी की आँखें खुल गईं।

कहानी से शिक्षा – 'शिक्षक हमें जो भी सिखाते हैं यदि उसपर कान दिया जाए, अमल किया जाए तो सफलता ज़रूर मिलती है।'

* * * * * *

छमाही के दौरान इसरो वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वी के सी) में आयोजित अन्य कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस समारोह-2021

15 अगस्त, 2021 को आईआईएसयू एवं सीएमएसई में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। आईआईएसयू में डॉ. डी साम दयाल देव, निदेशक, आईआईएसयू ने ध्वजारोहण किया और केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी ली। इस अवसर पर सभी का अभिवादन करते हुए दिए भाषण में उन्होंने कोविड -19 महामारी के कारण उत्पन्न कई व्यवधानों के बावजूद आईआईएसयू के विविध टीमों द्वारा की गई स्मार्ट प्रगति की सराहना की। विशेषकर उन्होंने गगनयान मिशन के लिए अर्ध मानव सदृश (हाफ-ह्यूमनॉइड) के विकास के लिए निरंतर प्रगति करने में रोबोटिकी टीम के प्रयासों की सराहना की। भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के इस अवसर पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' पर सरकार द्वारा की गई पहलों का हवाला देते हुए उन्होंने आईआईएसयू समुदाय से अपील की कि अगले 25 वर्षों के लिए संगठनात्मक और राष्ट्रीय लक्ष्यों को स्थापित करने हेतु पहले ही योजना बनाएँ और उन्हें प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करें। कोविड-19 नयाचारों का सख्ती से पालन करते हुए समारोह का आयोजन किया गया था। भारतीय स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए 'आजादी का अमृत महोत्सव' के भाग में संपूर्ण आईआईएसयू परिसर में दीपसज्जा किया गया था। सीमित संख्या में कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को कोविड-19 से संबंधित सभी नयाचारों का पालन करते हुए यह दीपसज्जा देखने की अनुमति दी गई थी।

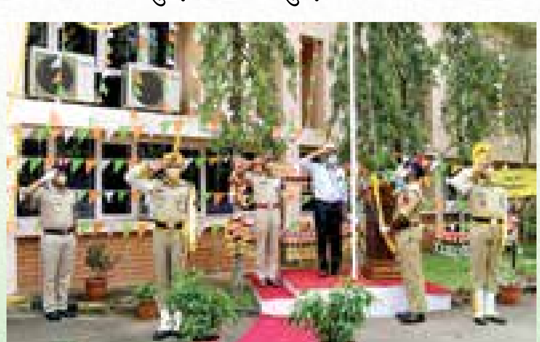

एलपीएससी से नई सामग्री की प्राप्ति

मनौवर अन्सारी
वैज्ञा/इंजी-एससी, आईएसएमपी

अंतरिक्ष और विमानन (aviation) अनुप्रयोगों के लिए उपयोग किए जाने वाले उच्च परिशुद्धतावाले कोणीय संपर्क बियरिंग (angular contact bearing) पारंपरिक रूप से विशेष श्रेणी के स्टेनलेस स्टील से बने होते हैं, जिन्हें एआईएसआई 440 सी (AISI 440C) कहा जाता है। यह वर्ग उच्च कठोरता (hardness) और घर्षण प्रतिरोधक (wear resistance), लंबे सेवाकाल तक उच्च आयामी स्थिरता (high dimesnsional stability) जैसी विशिष्ट सुविधाएँ प्रदान करता है। बॉल/रोलर्स, बियरिंग रेस जैसे सभी बियरिंग घटक इसी सामग्री (material) से बनाए जाते हैं। यह स्टेनलेस स्टील का उच्च कार्बन संस्करण है, जिसमें ट्रायबोलोजी (Triobology) आवश्यकताओं के लिए विशिष्ट विशेषताएँ है। उच्च आयामी स्थिरता इसे उच्च सटीकता (high accuracy) एवं लंबी सेवा अवधि वर्ग के बियरिंग के लिए उपयुक्त बनाती है जिसे मार्टेंसिटिक स्टेनलेस स्टील भी कहा जाता है जो मार्टेंसिटिक क्रिस्टलीन (Martensitic crystalline) संरचना के साथ स्टील का एक बहुत ही कठोर रूप है। यह एक शरीर केंद्रित (Body centred) टेट्रागोनल सूक्ष्म संरचना (Microstructure) है, जिसे पहली बार पिछली शताब्दी के जर्मन धातुविद् एडॉल्फ मार्टर्स द्वारा देखा गया था और उन्ही के स्मरण में इसका नाम दिया गया। इसका नाम किसी भी कठोर क्रिस्टल संरचना के अनुरूप है जो प्रसाररहित परिवर्तन (diffusion less transformation) द्वारा बनाई गई है। AISI 440C से निर्मित रोलिंग कॉन्टैक्ट बियरिंग के प्रमुख विफलता विधियों में से एक सहनशीलता शक्ति (fatigue strength) में कमी है। यह सतह से शुरू होती है और यह प्राय: कठोर धब्बों के गठन के कारण है जो घिसने के प्रतिरोध को और कम कर देता है।

जैसा कि बियरिंग आवश्यकताओं को अंतिम पूर्णता (ultimate perfection) और विश्वसनीय जीवन चक्र (reliable life cycle) की जरूरत पडती है, इसलिए हाल के वर्षों में बेहतर विकल्पों के साथ नए मिश्रधातुओं के प्रकार सामने आए हैं। एक विकल्प के रूप में, AISI440C के मिश्र धातु संशोधन के रूप में, उच्च नाइट्रोजन मार्टेंसिटिक स्टेनलेस स्टील (High Nitrogen Martensitic Stainless Steel) नामक मिश्रधातु का एक नया वर्ग विकसित किया गया है और इसे AMS 5925A के अनुसार मानकीकृत (standardise) किया गया है। इस मिश्र धातु में, सामर्थ्य (strength), कठोरता और संक्षारण प्रतिरोध (corrosion resistance) में गिरावट के बिना कार्बन सामग्री को नाइट्रोजन के साथ आंशिक रूप से प्रतिस्थापित (substitute) किया जाता है। यह महीन कार्बाइड का

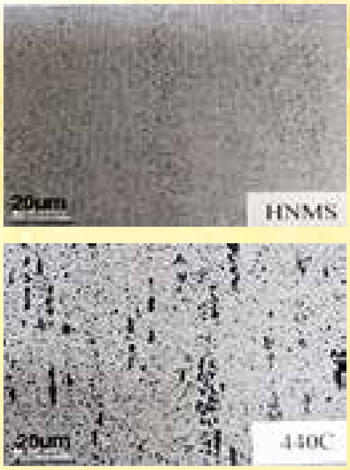

चित्र 1 : HNMS और AISI440C में माइक्रो स्ट्रक्चर

चित्र 2

समान वितरण सुनिश्चित करता है जिससे कि सहनशीलता शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है और कठोर धब्बों के निर्माण से बचाता है जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दर्शाया गया है। यह गड्ढे के गठन से भी बचाता है और अच्छा संक्षारण प्रतिरोध सुनिश्चित करता है।

एलपीएससी की पदार्थ विकास करनेवाली टीम ने एचएनएमएस के स्वदेशीकरण की पहल मेसर्स स्टारवेयर के साथ मिलकर की है। मेसर्स स्टारवेयर एक भारतीय इस्पात निर्माण कंपनी जिसने विभिन्न आकारों के साथ इस मिश्रधातु के एक बैच का विकास किया। चूंकि आयातित पदार्थों के बदले यह एक विकल्प है, आईआईएसयू ने रिएक्शन व्हील और मोमेंटम व्हील बियरिंग यूनिट अनुप्रयोगों के लिए एचएनएमएस का उपयोग करने के लिए एक योग्यता परीक्षण (qualification) योजना शुरू की है।

श्री थॉमस थरियन के, जीएम, एलपीएससी के एमडीपी/एमएमई ने 25 जून 2021 को डॉ. ए मणिमारन, डीडी, एमएमई/एलपीएससी की उपस्थिति में श्री राजीव सिन्हा, जीडी, एमडीपीजी/आईएसपीई, आईआईएसयू को इस मिश्रधातु का एक बैच सौंपा। एलपीएससी से प्राप्त इस मिश्रधातु को आईआईएसयू स्टॉक में जोड़ा गया है जिसका उपयोग योग्यता मॉडलों और उड़ान मॉडलों के उत्पादन में आगे शामिल करने के लिए किया जाएगा।

* * * * * *

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

– मैथिलीशरण गुप्त

* * * * * *

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

चुटकुले

1. पत्नी : मेरी शराफत देखो, मैंने आपको देखे बगैर ही आपसे शादी कर ली।
पति : मेरी शराफत देखो, मैंने देखकर भी इनकार नहीं किया।

2. मां : किचन से छोटी प्लेट ले आओ।
बेटी : मम्मी नहीं दिख रही है, कहां रखी है?
मां : गैस का चूल्हा दिखाई दे रहा है?
बेटी : हां।
मां : उसे ऑन करके मोबाइल में आग लगा दे, फिर प्लेट दिख जाएगी।

3. एक महिला पेट्रोल पंप पर पहली बार स्कूटी चला कर गई...
महिला – भईया, पेट्रोल कितने रुपए लीटर है...?
कर्मी – मैडम 80 रुपए लीटर...
महिला – ठीक से लगा लो भईया, बगल वाला तो 70 रुपए लीटर ही दे रहा है।
कर्मी – (गुस्से में) अरे मैडम जी, बगल में डीजल की मशीन है...!!

4. संता – डॉक्टर चश्मा लगने के बाद मैं पढ़ तो सकूंगा ना...?
डॉक्टर – हां बिल्कुल...
संता– फिर ठीक है डॉक्टर, नहीं तो अनपढ़ आदमी की जिंदगी भी कोई जिंदगी है...!!

5. रामू – जलेबी बेच रहा था, लेकिन कह रहा था – आलू ले लो आलू ले लो...
राहगीर– लेकिन ये तो जलेबी है
रामू – चुप हो जा! वरना मक्खियां आ जाएंगी।

6. मास्टर जी – शांति किसके घर में रहती है...?
रामू – जिस घर में पति और पत्नी दोनों मोबाइल चलाते हैं...!!!

7. रामू – चायपत्ती और पति में क्या समानता है... जानते हो?
गप्पू – नहीं... तुम ही बताओ!
रामू – दोनों के ही भाग्य में 'जलना' और 'उबलना' लिखा है...
और वो भी औरतों के हाथों...!!!

8. एक महाकंजूस पति अपनी पत्नी के साथ कहीं घूमने गया।
पत्नी – सुनो जी, मुझे प्यास लगी है। पानी की एक बोतल ले लीजिए।
पति – दही कचौरी खाएगी क्या...?
पत्नी – एजी, ऐसे मत बोलिए, मेरे तो मुंह में पानी आ गया।
पति – बस, तो उसीको पी ले। बोतल में क्या डूब के मरना है...!!!

(इंटरनेट के सौजन्य से)

स्वाद

अर्चना वासुदेवन
वरिष्ठ सहायक, आईआईएसयू लेखा

''बेटा आ जाओ, खाना तैयार है। क्लास से पहले खा लो नहीं तो भूखे रह जाओगे। मैं भी निकल रही हूँ। जल्दी करो।''

मैं ज़ोर से चिल्लाई। बाहर बिल्ली, कौआ सब शोर मचा रहे थे लेकिन मेरी बेटी का कोई पता नहीं, मानो उसके सिवा बाकी सब सुने। मैं फिर से चिल्लाई। (जब हम भी जल्दी में हों तो भूमि देवी तो नहीं बन सकते ना..........।)

क्या अम्मा, आप भी, इतना क्यों हल्ला मचाती हो ? मैं आ रही हूँ ना। ओहो.... क्या आज फिर से आप ने इडली बनायी। आप जानती हो मुझे यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, फिर भी आपने ....

मुझे भी गुस्सा आया। समय चला जा रहा था। दफ्तर के लिए देर हो रही था। फिलोसफी के लिए समय न था। मैं निकल गई। शाम को वापिस घर आई तो देखी कि सुबह की इडली खत्म......! मैं हैरान हो गई। जल्दी से कूड़े के डब्बे में देखी। नहीं, उसमें भी नहीं है।

''अम्मा आप आ गईं। चाय दूँ....।'' बेटी की आवाज़। मुझे हैरानी अधिक हुई। इसे क्या हुआ? मुझे चाय बना कर उसे पुकारना पड़ता था। चलो कुछ बदलाव तो अच्छा है। मन ही मन मुस्कुराकर अपनी पुत्री की बनायी हुई चाय का मज़ा लेने लगी। लेकिन उसका चेहरा उदास था। ''क्या हुआ मेरी प्यारी? चुप क्यों हों?''

उसकी आँख भर आई। अम्मा, ''मुझे माफ कीजिए (आईएम सॉरी)'', दुबारा ऐसा नहीं करूँगी। क्या हुआ.... मैं पूछी। अम्मा, आपके जाने के बाद यहाँ एक माँ और एक छोटी सी लड़की आई। वे बहुत ही क्षीणित और परेशान थे। कुछ मदद के लिए आए थे। मैं तो उन्हें सच में भगा देने का सोच रही थी। तब वह छोटी सी बच्ची अपनी माँ से कह रही थी,, माँ मुझे भूख लग रही है। वो उसकी साड़ी में ऐसे लटक रही थी। और वो माँ बहुत ही दयनीय होकर उसे और मुझे देख रहे थे।

पता नहीं मुझे क्या हुआ बिना कुछ देखे मैं ने वो इडली लाकर उन्हें दे दिया। वो माँ मेरी दी हुई सारी इडली अपनी बेटी को खिलाई और अपने लिए कुछ पानी माँगा। पानी के साथ मैंने कैसरोल में जो इडली बची थी वो भी उस अम्मा को दे दिया। लेकिन पानी पीकर उसने सिर्फ दो इडली अपनी बेटी के लिए लिया और एक अच्छी सी मुस्कान देकर चली गई। वह छोटी सी गुड़िया दूर तक मुझे टाटा करती रही।

उनके जाने के बाद, न जाने मुझे बहुत भूख लगी और मैं वो इडली उसके साथ बिना कुछ लिए हुए खाने लगी। तभी मुझे एहसास हुआ कि इडली कितनी स्वादिष्ट है। मुझे और चाहिए था लेकिन उस छोटी सी बच्ची को याद किया तो.....

मुझे तभी आप का दिखाया हुआ वो भयानक चित्र याद आया जिसमें एक बच्चे की मौत और इसका इंतज़ार करता हुआ गिद्ध।

हमारी इस दुनिया में मेरे जैसे कितने लोग होंगे जिसे खाने के लिए सब कुछ है लेकिन उस छोटी बच्ची जैसे कितने हैं जिन्हें कूड़े-कचड़े से अपने भूख मिटाने के लिए विवश होना पड़ता है। मेरी बेटी की आँख से आँसू बह रहे थे और वो बहुत मुश्किल से अपनी बात पूरा करने की कोशिश कर रही थी।

* * * * * *

नए सह निदेशक का कार्यभार ग्रहण

श्री के एस मणि, विशिष्ट वैज्ञानिक ने दिनांक 6 अगस्त, 2021 को सह निदेशक, आईआईएसयू के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इस पद पर तैनात होने से पहले वे विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता आश्वासन एन्टिटि के उप निदेशक के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने ग्रुप निदेशक, विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता आश्वासन एवं प्रवर्तक इलेक्ट्रॉनिकी प्रभाग के प्रधान के रूप में भी कार्य किया है।

उन्होंने केरल विश्वविद्यालय में दूसरा रैंक हासिल करके कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, तिरुवनंतपुरम से इलेक्ट्रॉनिकी एवं संचार इंजीनियरिंग में बी. टेक.पूरा करने के बाद वर्ष 1985 में इसरो में कार्यभार ग्रहण किया। उन्होंने वर्ष 1993 में उसी कॉलेज से इलेक्ट्रॉनिकी एवं संचार इंजीनियरिंग में एम. टेक. की उपाधि हासिल की। वे 1985 से 2011 तक आईआईएसयू में अभिक्रिया चक्र के लिए चक्र चालन इलेक्ट्रॉनिकी, स्वदेशी एवं आयातित टेलडिक्स संवेग चक्र, सौर व्यूह चालन इलेक्ट्रॉनिकी एवं विशेष यंत्रावलियों हेतु इलेक्ट्रॉनिकी प्रणाली अभिकल्पन एवं विकास के क्षेत्र में कार्यरत थे। वे इसरो अभियानों हेतु जीसैट-2, जीसैट-3, इन्सैट-4ए एवं इन्सैट-4 बी के लिए तथा विदेशी ग्राहकों हेतु डब्ल्यू 2 एम-यूटेलसैट और अवंति-हाइलास अंतरिक्ष यान के लिए उप परियोजना निदेशक (जड़त्वीय प्रणाली) थे।

उन्हें इसरो योग्यता पुरस्कार प्राप्त हुआ है और वे वर्ष 2015 में अंतरिक्ष प्रणालियों के शून्य त्रुटि वितरण के लिए टीम पुरस्कार के सदस्य भी रहे हैं। वे कई वैज्ञानिक मंचों के आजीवन सदस्य हैं। हाल ही में उन्हें अंतरिक्ष यानिकी की अंतर्राष्ट्रीय अकादमी (IAA) के सदस्य के रूप में चुना गया है।

सह निदेशक की सेवानिवृत्ति

श्री के अनिलकुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह निदेशक, आईआईएसयू ने 31 जुलाई, 2021 को अधिवर्षिता पर अपनी सेवानिवृत्ति के कारण आईआईएसयू से विदाई ली। वे 1986 में इसरो में शामिल हुए। उन्होंने कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, त्रिवेंद्रम से यांत्रिकी इंजीनियरी में बी.टेक की उपाधि और भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूरु से यांत्रिकी इंजीनियरी में एम.टेक. की उपाधि प्राप्त की। सह निदेशक, आईआईएसयू के रूप में पदभार ग्रहण करने के पहले वे जडत्वीय प्रणाली उत्पादन एन्टिटि के उप निदेशक थे। उसके पहले वे अंतरिक्ष यान जडत्वीय प्रणाली के उप निदेशक भी रह चुके हैं। वे जडत्वीय संवेदकों एवं प्रवर्तकों के क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं। अंतरिक्षयान के लिए उनके मुख्य योगदानों में सौरव्यूह चालन की अभिकल्पना एवं नीतभार यंत्रावली शामिल हैं।

राजभाषा नीति की मुख्य बातें

1. संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होगी ।
2. संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप (1,2,3,4,5,...) होगा।
3. राजभाषा अधिनियम, 1963 के अनुसार 26 जनवरी, 1965 के बाद भी अंग्रेज़ी का प्रयोग ज़ारी रहेगा ।
4. राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा 3(3) के अधीन विनिर्दिष्ट निम्नलिखित दस्तावेज़ों को हिंदी और अंग्रेज़ी द्विभाषी रूप में ज़ारी करना चाहिए : संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जानेवाली प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट, संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जानेवाले सरकारी कागज़-पत्र, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा-पत्र, सूचनाएँ, निविदा प्रारूप इन दस्तावेज़ों को द्विभाषी रूप में जारी करने का उत्तरदायित्व इनपर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का होगा ।
5. राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए राजभाषा नियम, 1976 के अधीन भारत को तीन भाषाई क्षेत्रों में विभाजित किया गया है – क्षेत्र 'क', क्षेत्र 'ख', क्षेत्र 'ग', क्षेत्र 'क' में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, बिहार, झारखंड, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और संघ राज्य क्षेत्र अंडमान निकोबार द्वीप समूह शामिल हैं। क्षेत्र 'ख' में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब और संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ, दमण एवं दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली हैं । क्षेत्र 'ग' में शेष राज्य और संघ राज्य क्षेत्र हैं ।
6. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार हिंदी या अंग्रेज़ी में होगा। अधिसूचित कार्यालयों को संबोधित पत्रादि का दूसरी भाषा में अनुवाद देना ज़रूरी नहीं है।
7. हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर बिना चूक हिंदी में दिया जाना है।
8. कोई कर्मचारी आवेदन, अपील, या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेज़ी में कर सकता है।
9. कर्मचारी फाइलों पर हिंदी या अंग्रेज़ी में टिप्पण कर सकता है। उनसे दूसरी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।
10. केंद्र सरकार के सभी कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो ।
11. उन कार्यालयों को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया जाएगा जिनमें 80% से अधिक कर्मचारियों को कम-से-कम हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो ।
12. मैनुअल, कोड, नाम-पट्ट, सूचना-पट्ट, पत्र शीर्ष, फार्म, रजिस्टर आदि द्विभाषी / त्रिभाषी रूप में होगा। भाषाओं का क्रम होगा –

द्विभाषी रूप	त्रिभाषी रूप
हिंदी	क्षेत्रीय भाषा
अंग्रेज़ी	हिंदी
	अंग्रेज़ी

13. राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग वार्षिक कार्यक्रम तैयार करता है। कार्यालयों में वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को हासिल करना ज़रूरी है ।
14. राजभाषा अधिनियम/नियमों के उपबंधों और इस संबंध में भारत सरकार द्वारा ज़ारी निर्देशों के सही अनुपालन का उत्तरदायित्व कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का होगा ।

* * * * * *

क्या आप जानते हैं?

आप सब जानते हैं कि हमारी राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है। हिंदी के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा उसके विकास की गति को और तीव्र करने के लिए राजभाषा नीति और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा प्रयुक्त स्मृति विज्ञान से प्रेरणा लेकर राजभाषा विभाग ने निम्नलिखित "12 प्र" की रूपरेखा तैयार की है:

1	**प्रेरणा** Inspiration and Motivation	कार्यालय का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं। अतः हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी कार्यालय के उच्चतम अधिकारी को अगुआई करना है।
2	**प्रोत्साहन** Encouragement	अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि हिंदी कार्यों की मात्रा बढ़ा सकें।
3	**प्रेम** Love and Affection	उच्च अधिकारियों को अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ प्यार और स्नेह होना चहिए। कार्य क्षेत्र में इसका प्रभाव पड़ेगा और कर्मचारियों को अधिक काम करने की ऊर्जा और उत्साह प्राप्त होगा।
4	**प्राइज़ (पुरस्कार)** Rewards	हिंदी कार्यान्वयन की अब तक की प्रगति में पुरस्कारों की बड़ी भूमिका है। अतः कार्यालयों को इस क्षेत्र में और भी वृद्धि लाने के लिए विविध पुरस्कारों की व्यवस्था करनी चाहिए।
5	**प्रशिक्षण** Training	जिन अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, उन्हें अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे भी हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम हो सकें।
6	**प्रयोग** Usage	अपने कार्यालयीन कार्यों में अधिकतर हिंदी का प्रयोग करें। प्रयोग न करने पर सीखी गई भाषा भूल जाने की संभावना है।
7	**प्रचार** Advocacy	हिंदी का प्रचार करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इसके लिए आधुनिक संचार माध्यमों का भी सहारा ले सकते हैं।
8	**प्रसार** Transmission	हिंदी का प्रसार भी हमारा संवैधानिक दायित्व है। पत्रिकाओं के प्रकाशन आदि से हिंदी का प्रसार बढ़ा सकते हैं।

9	**प्रबंधन** Administration and Management	किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊँचाइयों तक ले जा सकता है। अतः संस्था प्रमुखों को राजभाषा के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी स्वयं लेनी चाहिए।
10	**प्रमोशन (पदोन्नति)** Promotion	प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर कर्मचारियों का उत्साह बढ़ेगा और वे अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएंगे। हिंदी कार्यान्वयन के आधार-स्तंभ के रूप में कार्यरत राजभाषाकर्मियों की भी यथासमय पदोन्नति सुनिश्चित करनी चाहिए।
11	**प्रतिबद्धता** Commitment	राजभाषा की गति को और तीव्र करने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है। जब वे स्वयं हिंदी में कार्य करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व से पूरे कार्यालय को प्रेरणा मिलती है और हिंदी में कार्य करने के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार होता है। समय-समय पर कार्यान्वयन की निगरानी भी करनी है। कार्यालय की शीर्षस्थ बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन एक नियमित कार्यसूची मद होनी चाहिए। हर तिमाही में कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में ही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जानी चाहिए।
12	**प्रयास** Efforts	राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए हमें सदैव प्रयासरत रहना चाहिए।

विद्यावाचस्पति (डॉक्टर ऑफ फिलोसफी) से सम्मानित

श्री गिरीश शर्मा एन, ग्रुप प्रधान, एएसएटीजी/एआईएस/आईआईएसयू को ***"अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए जायरोस्कोप के उच्च गुणवत्ता वाले गुणक अनुनादक में कंपन ऊर्जा हानि तंत्र"*** विषयक शोध-प्रबंध के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), गुवाहाटी से विद्यावाचस्पति (डॉक्टर ऑफ फिलोसफी) की उपाधि प्रदान की गई। उन्होंने डॉ. सचिन सिंह गौतम, आईआईटी गुवाहाटी एवं डॉ. टी सुंदरराजन, एसटीएस, वीएसएससी के मार्गदर्शन में शोध कार्य किया। शोध कार्य के दौरान अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और सम्मेलनों में उनके आठ प्रकाशन हैं और साथ ही उनके द्वारा रचित एक पुस्तक-अध्याय भी है।

डॉ गिरीश शर्मा को हार्दिक बधाईयाँ!

श्री अभिलाष एम, वैज्ञा/इंजीनियर एसएफ, एएआईएसडी/एएसएटीजी को ***"विचित्रता परिवर्जन विधि का प्रयोग कर एकल-जिंबल नियंत्रण आघूर्ण जायरो से भू-चिह्न अनुवर्तन के लिए अंतरिक्षयान नियंत्रण"*** विषयक शोध-प्रबंध के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), मुंबई द्वारा विद्यावाचस्पति (डॉक्टर ऑफ फिलोसफी) की उपाधि प्रदान की गई। उन्होंने डॉ. हेमेंद्र आर्य, डॉ. हरि बी हबलानी, डॉ आदित्य ए परांजपे (सभी आईआईटी मुंबई से हैं) और डॉ डी साम दयाल देव (निदेशक, आईआईएसयू) के मार्गदर्शन पर शोध कार्य किया।

डॉ अभिलाष को हार्दिक बधाईयाँ!

वी के सी की हिंदी गतिविधियाँ

हिंदी कार्यशाला – जुलाई-सितंबर 2021, तिमाही

कोविड-19 महामारी को मद्देनजर रखते हुए प्रचलित दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजाभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2021, जुलाई-सितंबर तिमाही के लिए दिनांक 26 अगस्त, 2021 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई की "एसडी" श्रेणी के इंजीनियरों के लिए एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में आईआईएसयू और सीएमएसई के विभिन्न अनुभागों से नामांकित किए गए 22 कार्मिकों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.), वीकेसी ने सभी का स्वागत किया। श्री राजीव सिन्हा, ग्रुप निदेशक, एमडीपीजी ने कार्यशाला का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया।

कार्यशाला के लिए संकाय सदस्य के रूप में श्री एम जी सोम शेखरन नायर, उप निदेशक (रा.भा.), वीएसएससी को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने राजभाषा नीति की मुख्य बातों पर विस्तृत व्याख्यान दिया तथा कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए अपेक्षित जानकारी भी दी।

सत्रांत में सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला से संबंधित सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ संग्रहित की गईं। प्रतिभागियों के प्रतिनिधि के रूप में श्री संदीप कुमार ने कार्यशाला के आयोजन पर सबकी संतुष्टि व्यक्त की और संकाय सदस्य एवं कार्यशाला के आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सहायक निदेशक (रा.भा), वी के सी के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2021 की रिपोर्ट

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इसरो के वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वीकेसी) में दिनांक 10 सितंबर, 2021 से 24 सितंबर, 2021 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। वर्तमान कोविड-19 महामारी के इस अप्रत्याशित संकट की स्थिति में राजभाषा विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए इस समारोह के दौरान वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वीकेसी) में स्थित इसरो जड़त्वीय प्रणाली यूनिट (आईआईएसयू) तथा सम्मिश्र एन्टिटि (सीएमएसई) के हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए अलग-अलग रूप से हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कहानी/यात्रावृत्तांत लेखन, तस्वीर क्या बोलती है?, तकनीकी लेखन तथा कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों के विवाहितियों एवं बच्चों के लिए हिंदी निबंध लेखन और हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। टंकण प्रतियोगिता को छोड़कर शेष सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑन-लाईन तरीके से किया गया। बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इसके अलावा, राजभाषा विभाग तथा अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान कार्यालय परिसर में विभिन्न इमारतों के फ़ोयर में रखे प्लाज़्मा टी.वी. पर कुछ प्रमुख हस्तियों की हिंदी सूक्तियों का प्रदर्शन भी किया गया। इस अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा भी ली गई।

कोविड-19 महामारी के कारण अब तक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन नहीं किया जा सका है। हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों, उनके विवाहितियों एवं बच्चों को नकद पुरस्कार, संबंधित कर्मचारियों के बैंक खातों में जमा किए गए। कुल 54 पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा शैक्षिक वर्ष 2020-2021 के लिए कर्मचारियों के बच्चों में से 10 वीं कक्षा, राज्य पाठ्यक्रम एवं सीबीएसई, की अंतिम परीक्षा में हिंदी के लिए सर्वाधिक अंक प्राप्त कुमारी अभिजा एस, सुपुत्री श्री साइमन डी, तकनीकी अधिकारी-सी, आईआईएसयू तथा मास्टर माधव वी नायर, सुपुत्र श्री विनोद जी नायर, वैज्ञानिक इंजीनियर-एस.जी, सी.एम.एस.ई. को भी पुरस्कृत किया गया। सबको प्रमाणपत्र बाद में वितरित किए जाएँगे।

* * * * * *

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2021 के विजेताओं की सूची

1. प्रियदर्शन
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसएफ, पीएसएमडी, एआईएस

निबंध लेखन	प्रथम
तस्वीर क्या बोलती है ?	प्रथम
तकनीकी लेखन	तृतीय

2. सर्वेश कुमार सिंह
तकनीकी अधिकारी-सी, एलएमडी/बीएसटीजी

कहानी लेखन	तृतीय
तस्वीर क्या बोलती है ?	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

3. प्रेम प्रकाश
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए/एसआईएसजी

तस्वीर क्या बोलती है ?	द्वितीय
निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	सांत्वना
तकनीकी लेखन	सांत्वना

4. निशंक कुमार
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसएफ, एसआईएस

निबंध लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	द्वितीय
तकनीकी लेखन	सांत्वना

5. जगरूप
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसई, आरक्यूए

कहानी लेखन	प्रथम
तस्वीर क्या बोलती है ?	सांत्वना

6. मनु शर्मा
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसएफ, क्यूडीसी

तस्वीर क्या बोलती है ?	सांत्वना

6. मनौवर अन्सारी
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एससी, आईएसपीई

कहानी लेखन	सांत्वना

7. स्मिता नायर एस वी
वैयक्तिक सचिव, एमईएफए

निबंध लेखन	प्रथम
हिंदी टंकण	प्रथम

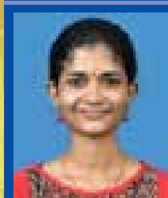

8. आरती एल
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसई, आरक्यूए,आईएसएसडी

तकनीकी लेखन	प्रथम
निबंध लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	सांत्वना
तस्वीर क्या बोलती है ?	सांत्वना

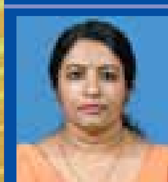

9. सोनी मोहन
वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसई आरक्यूए-एसआईएसडी

कहानी लेखन	प्रथम
तकनीकी लेखन	द्वितीय
तस्वीर क्या बोलती है ?	द्वितीय
निबंध लेखन	तृतीय

10. प्रकाश वी पी
वरिष्ठ सहायक, सीएमएसई भंडार

कहानी लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

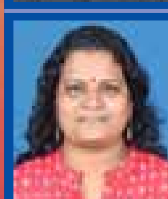

11. लेनिना एम एस
तकनीकी अधिकारी-सी, एसआईएस

कहानी लेखन	द्वितीय
निबंध लेखन	सांत्वना

12. कविता एम के
वैयक्तिक सहायक, टीएसटीजी, एमआईएसए

हिंदी टंकण	द्वितीय

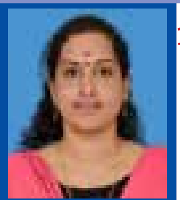

13. अनिला श्रीधर एस
वैयक्तिक सचिव, आईएसपीई
हिंदी टंकण — तृतीय
कहानी लेखन — सांत्वना

14. वसंतकुमारी आर
क्रय एवं भंडार अधिकारी, आईआईएसयू क्रय
हिंदी टंकण — सांत्वना

15. अश्वती जी के
वरिष्ठ सहायक, आईआईएसयू क्रय
हिंदी टंकण — सांत्वना

16. अर्चना वासुदेवन
वरिष्ठ सहायक, आईआईएसयू लेखा
तस्वीर क्या बोलती है ? — प्रथम

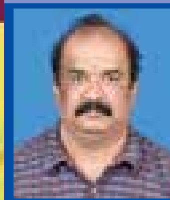

17. नवीन जी पाई
वैज्ञानिक इंजीनियर-एसजी, बीएसटीजी
तस्वीर क्या बोलती है ? — तृतीय

18. देशमुख शैलेश संजयराव
वैज्ञानिक इंजीनियर-एसएफ, एमईएफए
तस्वीर क्या बोलती है ? — सांत्वना

19. आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी
तस्वीर क्या बोलती है ? — सांत्वना

20. अंजना पी एस
वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी
तस्वीर क्या बोलती है ? — सांत्वना

कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए प्रतियोगिता

1. **श्रीमती रिम्पी कुमारी**, श्री प्रेम प्रकाश, वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए, आरक्यूए/एसआईएसजी की पत्नी
   निबंध लेखन — प्रथम
   कहानी लेखन — प्रथम
2. **श्री हरींद्रन नायर एस**, श्रीमती स्मिता नायर एस वी, वैयक्तिक सचिव, एमईएफए के पति
   निबंध लेखन — सांत्वना
3. **श्रीमती रूपलता शर्मा डी**, श्री नवीन जी पाई, वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसजी, बीएसटीजी की पत्नी
   निबंध लेखन — सांत्वना
4. **श्रीमती लिनि पी**, श्री शशिकुमार एस, उप निदेशक, एसआईएस की पत्नी
   कहानी लेखन — द्वितीय
   निबंध लेखन — तृतीय
5. **श्रीमती अभिलाषा कुमारी**, श्री विवेक राज, वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसडी, सीएमएसई की पत्नी
   कहानी लेखन — तृतीय
   निबंध लेखन — सांत्वना
6. **श्रीमती सोनी सिंह**, श्री संजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक/इंजीनियर-एसजी, एलसीएसडी की पत्नी
   निबंध लेखन — द्वितीय

कर्मचारियों के बच्चों के लिए प्रतियोगिता

1. **कुमारी गौरी शशिकुमार**, श्री शशिकुमार एस, उप निदेशक, एसआईएस की सुपुत्री
   निबंध लेखन — प्रथम
2. **कुमारी कृष्णप्रिया सिंह**, श्री संजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक इंजीनियर-एसजी, सीएमएसई की सुपुत्री
   निबंध लेखन — द्वितीय

कर्मचारियों के बच्चे जिन्होंने 10 वीं कक्षा (राज्य पाठ्यक्रम एवं सीबीएसई) की अंतिम परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए हैं।

राज्य पाठ्यक्रम

कुमारी अभिजा एस, श्री साइमन डी, तकनीकी अधिकारी-सी, एआईएस की सुपुत्री — प्रथम

सीबीएसई

मास्टर माधव वी नायर, श्री विनोद जी नायर, वैज्ञानिक इंजीनियर-एसजी, सीएमएसई के सुपुत्र - प्रथम

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयाँ !

उपलब्धियाँ

हिंदी पत्रिकाओं के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना 2019-2020

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की पत्रिकाओं के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना 2019-2020 के तहत "ग" क्षेत्र की सर्वोत्तम हिंदी पत्रिका के रूप में प्रथम पुरस्कार के लिए आईआईएसयू की अर्ध वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका "अक्ष" का चयन किया गया था। यह पुरस्कार 14 सितंबर, 2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी के कर-कमलों द्वारा वितरित किया गया और निदेशक, आईआईएसयू द्वारा ग्रहण किया गया।

'अक्ष' में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार

'अक्ष' के पिछले अंक (अक्तूबर, 2020-मार्च, 2021) में प्रकाशित निम्नलिखित रचनाओं के लेखकों को नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए :

गगनयान : एक अवलोकन

श्री शिवसुब्रह्मणि एस
उप निदेशक, एमआईएसए

1. गंगा का घाट
2. सौम्य सुंदर मनमोहक वागमन का भ्रमण

श्री राजीव सिन्हा
ग्रुप निदेशक, एमडीपीजी

स्त्री और आज

श्री प्रेम प्रकाश
वरि.तकनीकी सहायक ए, आरक्यूए

राजभाषा प्रश्नोत्तरी

श्रीमती आर महेश्वरी अम्मा
सहायक निदेशक (रा.भा.), वीकेसी

मूल काम हिंदी में करने हेतु पुरस्कार योजना, 2020-2021

अंतरिक्ष विभाग की राजभाषा प्रोत्साहन योजना (सोलिस) के तहत वर्ष 2020-2021 के लिए कार्यालयीन कार्य मूल रूप से हिंदी में करने हेतु वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) के निम्नलिखित कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए

आशा ए एस
वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी
विशेष पुरस्कार प्रथम

अंजना पी एस
वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी
विशेष पुरस्कार द्वितीय

शीजा जॉय
वरिष्ठ सहायक, पीजीए, वीकेसी
प्रथम

लता बी
वरिष्ठ परियोजना सहायक
आईआईएसयू क्रय
प्रथम

अश्वती जी के
वरिष्ठ सहायक
आईआईएसयू क्रय
द्वितीय

वी के संतोष कुमार
वरिष्ठ परियोजना सहायक
आईआईएसयू क्रय
द्वितीय

अनीश वी बी
वरिष्ठ सहायक
आईआईएसयू भंडार
तृतीय

श्रीलक्ष्मी एस
वरिष्ठ सहायक
आईआईएसयू भंडार
तृतीय

प्रेम प्रकाश
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-ए
आरक्यूए
तृतीय

अश्वती एस लाल
वरिष्ठ सहायक
सीएमएसई भंडार
तृतीय

प्रकाश वी पी
वरिष्ठ सहायक
सीएमएसई भंडार
तृतीय

सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाइयाँ

पाठकों की ओर से

आपके कार्यालय से ई-मेल द्वारा प्रेषित हिंदी गृह-पत्रिका 'अक्ष' के 9 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

सर्वप्रथम गृह पत्रिका 'अक्ष' को वर्ष 2019-2020 के लिए राष्ट्रीय कीर्ति पुरस्कार एवं नराकास, तिरुवनंतपुरम द्वारा हिंदी गृह पत्रिका की श्रेणी में सर्वोत्तम पत्रिका के रूप में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। कार्यालय में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन और अन्य समाचारों की पत्रिका में सुंदर प्रस्तुति की गई है। पत्रिका की सजावट, कलेवर व रूपरेखा अनुकरणीय है।

पृष्ठ सं.7 पर प्रकाशित रचना 'गगनयान: एक अवलोकन' से गगनयान मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। श्री जगरूप जी की रचना 'भारत में किसानों की दशा' किसानों की दयनीय स्थिति को बताती है।

हिंदी गृह-पत्रिका 'अक्ष' के सफल प्रकाशन हेतु बधाई।

नीलू सेठ, उप निदेशक (राजभाषा), सैक

कोरोना महामारी के दौरान 'अक्ष' के 9 वें अंक का विमोचन प्रशंसनीय है। इस पहल के लिए आप और आपकी टीम बधाई के पात्र हैं। तकनीकी, वैज्ञानिक एवं सामान्य विषयों से सज्जित 'अक्ष' ज्ञानप्रद है। इस अंक में वीकेसी में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों और राजभाषा से संबंधित प्रतियोगिताओं के सुंदर प्रदर्शन से राजभाषा की गतिविधियों की झलक मिलती है। नए विषयों सहित नए अंक की प्रतीक्षा रहेगी। संपादकीय समिति को शुभकामनाएँ।

सीना राजेंद्रन, वरि.हिंदी अधिकारी, यू.आर राव उपग्रह केंद्र, बैंगलूर

'अक्ष' के नौवें अंक की डिजिटल प्रति प्राप्त हुई। गृह-पत्रिका के डिजिटल रूप में प्रकाशन के लिए संपादन मंडल के समस्त सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका में समाहित लेख बड़े ही रोचक एवं उच्च कोटि के हैं, जिसमें अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, राजभाषा गतिविधियाँ, प्रकृति आदि का अभिन्न संगम दर्शनीय है। सभी लेखकों को ढेर सारी बधाई। मेरी शुभकामना है कि 'अक्ष' पत्रिका दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति के सोपान चढ़कर बुलंदियों को छूती रहे।

शत्रुघ्न, सहायक निदेशक (रा.भा.), एमसीएफ

दिनांक 29.04.2021 को आपके द्वारा भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका 'अक्ष' के 9 वें अंक की ई-पत्रिका इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख संग्रहणीय तथा अत्यंत ज्ञानवर्धक है। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। 'अक्ष' के संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ टी विजय शेखर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, आईपीआरसी

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2021 - पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

अक्ष

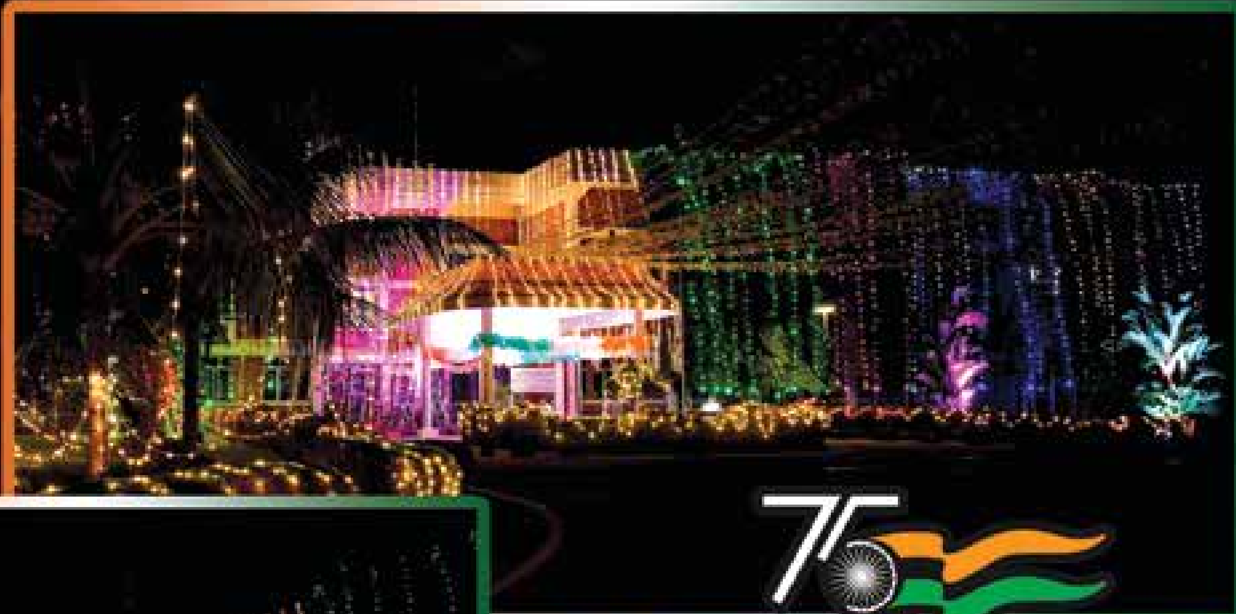

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

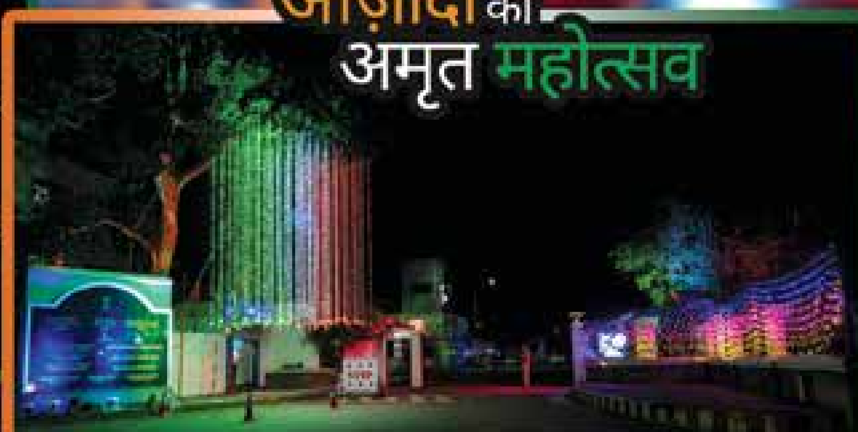

हिंदी अनुभाग, वीकेसी द्वारा प्रकाशित; मेसर्स भानु ऑफसेट, तंपानूर, तिरुवनंतपुरम में मुद्रित